हिन्दी अनुवाद सहित

विष्णु सहस्त्रनाम

मूल्य

दीप पब्लिकेशन, आगरा-3

श्री

विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र

भाषा-टीका

- भगवान विष्णु के १००८ नामों की गणना सहित
- कनक धारा स्तोत्र
- लक्ष्मी स्तोत्र
- नारायण कवचम्
- पुरुषसूक्तम्
- श्री सूक्तम्
- कनक धारा स्तोत्रम्
- लक्ष्मी जी तथा तुलसीजी की आरतियाँ

पं. ज्वाला प्रसाद मिश्र

दीप पब्लिकेशन हास्पीटल रोड आगरा-३

मूल्य १२ रु.

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

* अथ *

श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

भाषाटीकासमेतम्

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे॥

जिसके स्मरणमात्र से प्राणी जन्मरूपी संसार के बन्धन से छूट जाता है। समर्थ तथा सर्वव्यापक उस विष्णु भगवान को नमस्कार है।

नमः समस्त भूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे॥

समस्त प्राणियों में आप आदि भूत हैं, अनेक रूपों में विद्यमान हैं, ऐसे आप सर्वव्यापक विष्णु के लिये नमस्कार हैं।

वैशम्पायन उवाच—

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत।१।

वैशम्पायनजी बोले—समस्त पवित्र धर्मों [१] को शान्तनु के पुत्र भीष्म पितामह से अच्छी तरह सुनकर राजा युधिष्ठिर [२] ने भीष्म से फिर पूछा॥१॥

युधिष्ठिर उवाच—

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम्।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाःशुभम्।२।

युधिष्ठिर जी बोले—इस लोक में समस्त फल के दाता; सर्वाराध्य देवता कौन है ? अथवा सबसे श्रेष्ठ प्राप्त करने लायक कौन है ? किसकी स्तुति से तथा किसके पूजन से मनुष्य इस लोक परलोक के शुभ फल को प्राप्त करता है॥२॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात्।३।

सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म आप किसको मानते हैं ? और किसका जप करता हुआ प्राणी जन्म रूपी संसार के बन्धन से छूट जाता है॥३॥

१—आपद्धर्म, राजधर्म, मोक्षधर्म, दानधर्म और श्रवण, मनन, निदिध्यासन तथा व्रत, उपासना, उपवास, प्रायश्चित्तादि धर्म। २- संग्राम में स्थिर रहने वाला अर्थात् स्वकार्य में कुशल।

२—युधिष्ठिर ने ६ प्रश्न किये—१-कौन बड़ा देवता है ? २- कौन प्राप्त होने लायक है । ३-कौन अधिकारी है? ४- किस की स्तुति पूजन से अधिकारी को शुभ फल मिलता है? ५- सबमें श्रेष्ठ धर्म कौन है? ६-किसके नाम जपने से पुनर्जन्म नहीं होता है?

भीष्म उवाच—

जगत्प्रभुं, देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः।४।

भीष्म पितामह जी बोले—पुरुष सदा उठकर जगत् के स्वामी, देवादेव, अनन्त, पुरुषोत्तम की, सहस्र नाम से स्तुति करता हुआ।।४।।

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च।५।

तथा उसी अविनाशी पुरुषोत्तम भगवान की भक्ति से नित्य पूजा करता हुआ और ध्यान, स्तवन, नमस्कार, भजन करता हुआ।।५।।

अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत्।६।

जो आदि अन्त से रहित, व्यापक, समस्त लोक में महान् देव और समस्त लोक के साक्षी हैं, उस विष्णु भगवान की नित्य स्तुति करता हुआ प्राणी सम्पूर्ण दुःख से अर्थात् आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक त्रिविध ताप से छूट जाता है।।६।।

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम्।७।

जो ब्रह्मण्य अर्थात् वेद, तप ब्रह्म का हितकारी है, समस्त धर्म को जानने वाला, प्राणियों की कीर्ति बढ़ाने वाला, लोकनाथ, महद्भूत, समस्त प्राणियों की उत्पत्ति का कारण है।।७।।

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा।८।

यह सम्पूर्ण धर्मों में बहुत बड़ा धर्म हमको इष्ट है, जो भक्ति से स्तुति द्वारा मनुष्य हमेशा पुण्डरीकाक्ष भगवान का पूजन करे।।८।।

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ।९।

जो सर्वश्रेष्ठ महान तेज है और तप अर्थात् ऐश्वर्य है, जो सत्यादि स्वरूप परम पूजनीय ब्रह्म है तथा जो परम परायण अर्थात् पुनरावृत्ति से रहित उत्कृष्ट स्थान है।।९।।

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ।१०।

जो पवित्रों में पवित्र, मंगलों में मंगल, देवताओं में परम देवता, भूतों में अव्यय पिता अर्थात् अविनाशी रक्षक है।।१०।।

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादि युगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ।११।

युगों के आदि में समस्त भूत प्राणी जिससे प्रकट होते हैं और युगों के अन्त होने पर जिसमें पुनः प्रलय को प्राप्त हो जाते हैं।।११।।

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णोर्नामसहस्रं मे श्रृणु पापभयापहम्।१२।

हे भूपते ! उस लोक प्रधान, जगन्नाथ, विष्णु भगवान् के समस्त पाप तथा भयनाशक सहस्रनाम को मुझसे सुनो।।१२।।

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ।१३।

उस महात्मा के जो गौण अर्थात् गुण, जन्म कर्म से होने वाले

नाम हैं तथा विख्यात अर्थात् विशेष प्रसिद्ध नाम हैं और ऋषियों से गान किये गये जो नाम हैं, उनको पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लाभ के लिए कहता हूँ॥१३॥

विष्णोर्नाम सहस्त्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।
छन्दोऽनुष्टुपतथादेवो भगवान्देवकीसुतः ॥

महर्षि वेदव्यासजी इस विष्णु सहस्त्रनाम के ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द हैं और भगवान देवकी सुत श्रीकृष्ण चन्द्र जी देवता हैं॥

विष्णुं विष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।
अनेक रूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥

सर्वव्यापक, शत्रुओं के नाशकर्ता, महाविष्णु, सबके उत्पत्ति के कारण हैं। महेश्वर, अनेक रूप धारण कर दैत्यों के संहार कर्त्ता पुरुषोत्तम भगवान के लिये नमस्कार है॥

ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य श्रीभगवान वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णः परमात्मादेवता आत्मयोनिः स्वयंजात इति बीजम्, देवकीनन्दनः स्त्रष्टेतिशक्तिः उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्, श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं सहस्त्रनामस्तोत्रजपेविनियोगः॥

॥अथ अंगन्यासः॥

ॐ श्रीवेदव्यासऋषये नमः शिरसि॥
ॐ अनुष्टुप्छन्द से नमः मुखे॥
ॐ श्रीकृष्णपरमात्मादेवतायै नमः हृदि॥
ॐ शंखभृन्नन्द की चक्रीति कीलकाय नमःसर्वांग ॥

॥अथकरन्यासः ॥

ॐ उद्भवायं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ उद्भवाय अनानिकाभ्यां नमः ॥
ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥
ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

॥अथ हृदयादिन्यासः॥

ॐ विश्वंविष्णुर्वषट्कार इतिहृदयाय नमः ।
अमृतां शूद्भवोभानुरिति शिरसे स्वाहा ।
ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शिखायै वषट् ।
सुवर्णा विंदुरक्षोभ्य इति कवचाय हुँ ॥
आदित्यो ज्योतिरादित्य इति नेत्रत्राय वौषट् ।
शारंगधन्वागदारः इति अस्त्राय फट् ॥

इस विष्णु के दिव्य सहस्रनाम के ऋषि वेदव्यास हैं, अनुष्टुप छन्द हैं, श्रीकृष्ण परमात्मा देवता हैं, आत्मा योनिः स्वयं जात, यह बीज है, देवकीनन्दन सृष्टा, यह शक्ति हैं, 'उद्भवः क्षोभणो देव' यह मन्त्र है, शंखभृन्नन्दचक्री यह कीलक है, ऐसे दिव्य सहस्रनाम का मैं श्रीकृष्ण से प्रसन्नार्थ पाठ करता हूँ। इन तीनों न्यासों का पाठ करने वाला यह संकल्प करके पाठ करे कि मेरे अंग प्रत्यंग सब श्रीकृष्ण अर्पण हैं और जब अंग प्रत्यंग भगवान के अर्पण कर चित्त की वृत्ति को एक कर ध्यान करने से सिद्धी प्राप्त होती है।

।।अथध्यानम्।।

शान्ताकारं भुजनशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

शान्तरूप, शेषशार्या, नाभि में कमल धारण करने वाले, देवों के देव, विश्व के आधार, आकाश के समान व्यापक, मेघ के समान नील वर्ण, शोभायमान जिनके अंग हैं लक्ष्मीनाथ जी योगीजनों के ध्यान में आने वाले, सम्पूर्ण लोकों के नाथ, सांसारिक भय को दूर करने वाले ऐसे सर्व व्यापक विष्णु के लिए मेरा नमस्कार है।।

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः।१४।

विश्वम्—जो जगत् का कारणस्वरूप परब्रह्म है। **विष्णुः**—जो सबमें रहने वाला है। **वष्टकार**—जो यज्ञस्वरूप है। **भूतभव्यभवत्प्रभुः**—जो भूत, भविष्य और वर्तमान कालत्रय के ऐश्वर्य से युक्त है। **भूतकृत**—जो रजोगुण व तमोगुण के आश्रय से सृष्टि तथा प्रलय करने वाला ब्रह्म व रुद्ररूप है। **भूतभृत**—जो संत्त्व गुण के आश्रय से धारण तथा पोषण करने वाला विष्णुरूप है। **भावः**—जो सत्तात्मक नित्य है। **भूतात्मा**—जो प्राणियों का अन्तर्यामी है। **भूतभावनः**—जो प्राणियों का उत्पन्न करने वाला है।।१४।।

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोअक्षर एव च ।१५।

पूतात्मा—जो शुद्धात्मा है। **परमात्मा**—जो कार्य कारण से विलक्षण रूप, नित्य,शुद्ध तथा मुक्त स्वभाव वाला है। **मुक्तानां परमागतिः**—जो मुक्तों के सर्वश्रेष्ठ गन्तव्य देवता है। **अव्यय**—जो नाश रहित है। **पुरुषः**—जो अनेक शरीरों में रहने वाला है, व समस्त कर्मफलों का देने वाला है, व संहारकाल में समस्त भुवनों का नाश करने वाला है। **साक्षी**—जो साक्षात् समस्त संसार का द्रष्टा है। **क्षेत्रज्ञः**—जो क्षेत्र अर्थात् शरीर का 'ज्ञ' अर्थात् जानने वाला है। **अक्षरः**—जो टलने वाला नहीं है।।१५।।

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः।
नरसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः।१६।

योगः—समस्त ज्ञानेन्द्रिय और मन से जीवात्मा तथा परमात्मा दोनों में एक भावना करना योग है। **योगविदां नेता**—जो उक्त योग को जानने वाले ज्ञानेन्द्रियों का योग और क्षेम का वहन करना वाला है। **प्रधानपुरुषेश्वरः**—जो प्रधान अर्थात् प्रकृति अर्थात् माया, पुरुष अर्थात् जीव इन दोनों का ईश्वर है। **नरसिंहवपु**—जो मनुष्य तथा सिंह के समान शरीधारी है। **श्रीमान्**—जो निरन्तर लक्ष्मी को वक्षःस्थल से धारण करने वाला है। **केशवः**—जो सुन्दर केशधारी है, अथवा केशी नामक दैत्य का नाश करने वाला है। **पुरुषोत्तम**—क्षर जो जड़ पदार्थ हैं उनमें मैं परे हूँ और अक्षर जो चेतन है उनका मैं प्रेरक होने से अक्षर से भी उत्तम हूँ, इन्हीं कारणों से मैं लोक और वेद दोनों में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ, ऐसा गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है। अथवा जो पुरुषों में उत्तम है अर्थात् जीव और ईश्वर दोनों से परे शुद्ध ब्रह्म है।।१६।।

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः।१७।

सर्व—जो सत् और असत् दोनों के उत्पत्ति, पालन तथा नाश का आश्रय है। **शर्वः**—जो संहारकाल में समस्त का नाश करने वाला है। **शिवः**—संहारकाल में समस्त जिसमें शयन करें, अथवा जो सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से रहित होने से शुद्ध है। **स्थाणुः**—जो सदा स्थिरभाव है। **भूतादिः**—जो समस्त भूतों का आदि कारण है। **निधिरव्ययः**—जो अविनाशी निधि है। **सम्भवः**—जो धर्मस्थापन और दुष्टदलन के लिए प्रत्येक युग में प्रकट होता है। **भावनः**—जो समस्त प्राणियों के फल प्रदान की भावना करने वाला है। **भर्त्ता**—जो प्रपञ्च का अधिष्ठाता होकर भरण-पोषण करने वाला है। **प्रभवः**—जगत् जिससे प्रादुर्भूत हो। **प्रभुः**—जो समस्त कार्य में सामथ्य रखने वाला है। **ईश्वरः**—जो समस्त ऐश्वर्यवान् है।।१७।।

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षी महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ।१८।

स्वम्यभूः—जो स्वयं बिना सहायता के प्रकट होता है। **शम्भुः**—जो भक्तों के लिए सुख की भावना करता है। **आदित्यः**—जो देवमाता अदिति में वामन होकर प्रकट होने वाला है। **पुष्कराक्षः**—जो कमल के समान नेत्र वाला है। **महास्वनः**—जो 'न से भक्त:प्रणश्यति' मेरा भक्त नहीं नष्ट होता है, ऐसा महान् वेदस्वरूप शब्द करने वाला है। **अनादिनिधनः**—जो जन्म और विनाश से रहित है। **धाता**—जो अनन्त आदिरूप से जगत् को धारण करने वाला है। **विधाता**—जो जगत् के चर्म तथा फल रचने वाला है। **धातुरुत्तमः**—जो ब्रह्मा से श्रेष्ठ है, अथवा पृथिव्वादि धातु से श्रेष्ठ है।।१८।।

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः।१९।

अप्रमेयः—जो प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्दादि प्रमाणों से भी निश्चय ज्ञान का विषय न हो। **हृषीकेशः**—जो इन्द्रियों का क्षेत्ररूप से ईश्वर है, अथवा जो इन्द्रियों का जीवों के समान अनीश्वंर नहीं है। **पद्मनाभः**—जगत्त का कारण स्वरूप कमल जिसके नाभि में है। **अमरप्रभुः**—जो देवताओं का प्रभु है। **विश्वकर्मा:**—जिसकी क्रिया जगत है, अथवा ज़ो कृपया विश्व के समस्त सारथ आदि ऊँचे नीचे के क्रम् को करने वालै। **मनुः**—जो मननशील है। **त्वष्टः**—जो संहारकाल में जगत को सूक्ष्म करता है। **स्थविष्ठः**—जो अतिशय करके स्थूल हैं। **स्थविरोध्रुवः**—जो विकार रहित और वृद्ध है॥१९॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम्।२०।

अग्राह्यः—जो शब्द और मन से ग्रहण के योग्य न हो। **शाश्वतः**—जो भूत, भविष्य, वर्तमान, समस्त काल में रहने वाला है। **कृष्णः**—जो स्त्रियों के मन को आकर्षित करने वाला है, व जो युगभेद से कृष्ण वर्णधारी है, अथवा सत्ता व सुखरूप है। **लोहिताक्षः**—जो लाल नेत्र वाला है। **प्रतर्दनः**—जो प्रलय काल में भूतों का नाश करने वाला है। **प्रभूतस्त्रिककुब्धामः**—जो ज्ञान ऐश्वर्य आदि करके सम्पन्न और ऊर्ध्व, अधः मध्य, भेद से तीन दिशाओं का धाम अर्थात् तेजः स्वरूप है। **पवित्रम्**—जो पवित्र करने वाला है। **मंगलम् परम्**—जो समस्त मंगलों से उत्तम है॥२०॥

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ।२१।

ईशानः—जो समस्त जीवों का नियन्ता है। **प्राणदः**—जो प्राण का देने वाला अथवा कलात्मक होकर प्राणों का नाश करने वाला है। **प्राण**—जो समस्त का प्राणरूप है। **ज्येष्ठः**—जो समस्त का कारण होने से अतिवृद्धि है। **श्रेष्ठः**—जो सब में श्रेष्ठ है। **प्रजापतिः**—जो प्रजाओं का रक्षक है। **हिरण्यगर्भः**—जो सुवर्णमय अण्ड के भीतर रहने वाला है अथवा ब्रह्मरूप है। **भूगर्भः**—जिसके गर्भ में पृथ्वी है। **माधवः**—जो लक्ष्मी का पति है। **मधुसूदनः**—जो मधु नामक महासुर का नाश करने वाला है।।२१।।

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ।२२।

ईश्वरः—जो सर्वशक्तिवान् है। **विक्रमी**—जो पराक्रमशाली है। **धन्वी**—जो शांगनामक धनुष को धारण करने वाला है। **मेधावीः**—जो बुद्धिमान् है। **विक्रमः**—जो गरुड़ की सवारी पर चलता है। **क्रमः**—जो वामन होकर जगत् को नापने वाला विराट् रूप है। **अनुत्तम**—जो सर्वो में श्रेष्ठ है। **दुराधर्षः**—जो शत्रुओं के वशीभूत होने वाला नहीं है। **कृतज्ञः**—जो प्राणियों के पुण्य पापरूप कर्म् का ज्ञाता है। **कतिः**—जो पुरुष का प्रयत्नरूप है। **आत्मवान्ः**—जो अपनी महिमा में सदा एक सा स्थिर रहता है।।२२।।

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ।२३।

सुरेशः—जो देवताओ के स्वामी हैं। शरणम्—जो दुःखों से
क्त करने वाला है। शर्मः—जो दुःख तथा दुःखोत्पादक कर्म का
ाशकर्ता सुखरूप है। विश्वरेताः—जो विश्वरूप कार्य का कारण
। प्रजाभवः—जो प्रजाओं का उत्पत्ति स्थान है। अहः—जो प्रकाश
ारूप है। संवत्सरः—जिसमें क्षण से लेकर अयन तक काल
ली-भाँति निवास करे। व्यालः—जो अखण्ड कालरूप होने से
ान्धनमुक्त है, अथवा जो गज तथा सर्प के समान पकड़ा न जाय।
-त्ययः—जो ज्ञानरूप है। सर्वदर्शनः—जो भक्तों को इष्ट वस्तु को
ि दिखलाने वाला अथवा स्वयं समस्त जगत् का द्रष्टा है।।२३।।

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिः सृतः।२४।

अजः—जो जन्म रहित है। सर्वेश्वरः—जो समस्त ईश्वरों का
श्वर है। सिद्धिः—जो सदा सिद्ध रूप है अर्थात् वृद्धि तथा ह्रास से
रहित है। सिद्धिः—जो चैतन्य रूप है। सर्वादिः—जो समस्त प्राणियों
का कारण रूप है। अच्युतः—जो स्वरूप से गिरने वाला नहीं है।
वृषाकपिः—समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला जो वृष (धर्म)
ौर कपि (वर ह) अर्थात् धर्मस्वरूप वराह भगवान् है अथवा जो
ारण मात्र से सब कामनाओं की पूर्ण तथा क्लेशों को नाश करने
ाला है, अथवा वृष जो अरिष्टासुर है, उसको नष्ट करने वाला है।
मेयात्माः—जो यथार्थ ज्ञान के विषय न हो। सर्वयोगविनिः
तः—जो समस्त योग तथा सम्बन्ध से पृथक है।।२४।।

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः।२५।

वसुः—समस्त प्राणी जिसमें वास करें अथवा समस्त प्राणियों में
ो वास करे, अथवा वसूनामस्मि पावकः अर्थात् जो अष्ट वसुओं में

पावक (अग्नि) नामक वसु है। **वसुमनाः**—जो रागादि क्ले
अनिन्दित (शुद्ध) मन वाला है, अथवा भीष्म में लगा है मन जिसव
सत्यः—जो सत्य स्वरूप है। **समात्माः**—जो एक आत्मा
सम्मितः—जो शास्त्र से अच्छी तरह यथार्थ ज्ञान का विषय
अथवा **सम्मितः**—अर्थात् शास्त्र से जिसका यथार्थ ज्ञान न है
समः—जो सर्वकाल में विकार रहित है। **अमोघः**—जो सत्यसंक
रूप है। **पुण्डरीकाक्षः**—जो हृदयरूपी कमल को व्याप्त कर र
वाला है। **वृषकर्माः**—जो धर्मरूप कर्म करने वाला
वृषाकृतिः—जो धर्म के अवतारधारी हैं॥२५॥

रुद्रो बहुशिरा बभ्रु र्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः।२६

रुद्रः—जो संहार काल में प्रजाओं को रुलाता है। **बहुशिराः**—
अनेक सिर वाला है 'सहस्रशीर्षा पुरुषः' इस प्रमाण से। **बभ्रुः**—
समस्त लोक का पालन-पोषण करने वाला है। **विश्वयोनिः**—
विश्व (संसार) का उपादान कारण है। **शुचिश्रवाः**—जो पवित्र विष
का श्रवण करने वाला है। **शाश्वतस्थाणुः**—जो समस्त काल
सम्बन्ध वाला है। **वरारोहः**—जो सर्वश्रेष्ठ प्राप्य स्थान
महातपाः—जो समस्त सृष्टि विषयक ज्ञानवान् है॥२६॥

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ।२७

सर्वगः—जो सर्वत्र गमन करने वाला है। **सर्वविद्भानुः**—जो स
को जानने वाला और सतरूप से दीप्यमान है
विस्वक्सेनः—जिसकी सेना जरासन्धादिकों की सेना को घेर ले
वाली हो। **जनार्दनः**—जो दुष्टजनों का नाश करता है। **वेदः**—ज

तत्त्वज्ञान का बोध करने वाला है। **वेदवित**—जो समस्त वेद का अर्थ तथा पाठ जानने वाला है। **अव्यंग:**—जो समस्त वेदोक्त तथा पुरोक्त अंगों से रूर्ण है। **वेदांग**—जिसके सामने समस्त वेद पार्षदरूप होकर वर्तमान हैं। **वेदवित्त:**—जो सान्दीपनी गुरु से समस्त वेद को प्राप्त करने वाला है। **कवि:**—जो अतीन्द्रय वस्तु को देखने वाला है॥२७॥

लोकाध्यक्ष: सुराध्यक्षो धर्माध्यक्ष: कृताकृत: ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुदष्ट्रश्चतुभुज: ।२८।

लोकाध्यक्ष:—जो समस्त लोकों का प्रधान द्रष्टा है। **सुराध्यक्ष:**—जो सात्विक इन्द्रादि देवताओं का स्वामी है, अथवा जो इन्द्रादि देवताओं से प्रत्यक्ष होने वाला है। **धर्माध्यक्ष**—जो भगवद्धर्म से प्रत्यक्ष होने वाला है। **कृताकृत:**—जो सृष्टि कार्य तथा कारण रूप है। **चतुरात्मा:**—जो पालन संहार काल में पृथक-पृथक चार आत्मा अर्थात् स्वरूप (विभूति) धारण करने वाला है। **चतुर्व्यूह:**—जो वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, संकर्षण नाम से चार स्वरूप धारण कर सृष्टिव्यादि करने वाला है। **चतुर्दंष्ट्र:**—जो नृसिंहरूप होकर चार दंष्ट्रा वाला है। **चतुर्भुज:**—जो चार भुजाधारी है॥२८॥

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिज: ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनि: पुनर्वसु: ।२९।

भ्राजिष्णु:—जो सदा प्रकाशरूप है, अथवा जो श्याम शोभायमान है। **भोजनम्:**—जो भोग्यरूप है। **भोक्ता**—जो भोक्तारूप है। **सहिष्णु:**—जो सहनशील है, अथवा **असहिष्णु:**—जो भक्तों की पीड़ा को सहन नहीं करता है। **जगदादिज:**—जो हिरण्यगर्भ रूप से

जगत् के आदि में होने वाला है। **अनघः**—जो पाप रहित है। **विजयः**—जो ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्यादि से विजयशील है। **जेताः**—जो सर्वो में श्रेष्ठ है। **विश्वयोनिः**—जो विश्व अर्थात् कार्यरूप, योनि अर्थात् कारण रूप है। **पुनर्वसुः**—जो बारम्बार अवतार लेकर जींवरूप होने वाला है॥२९॥

उपेंद्रोः वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूपर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रह सर्गोधृतात्मा नियमो यमः ।३०।

उपेन्द्रः—जो इन्द्र के आदि अनुज होकर अदिति में धारण करने वाला है। अथवा जो कृष्णवतार में गोवर्धन धारण के बाद इन्द्र के मद मर्दन के समय उपेन्द्र (इन्द्रश्रेष्ठ) नामधारी है। **वामनः**—जो वामनरूप होकर बलि से याचना करने वाला है। **प्रांशुः**—जो बलि से दान मिलने के बाद तीनों जगत को नापने के लिए विराट रूपधारी है। **अमोघः**—जो कभी भी निष्फल होने वाला नहीं है, अर्थात् भक्तों के लिए कल्पवृक्ष है। **शुचि**—जो अनन्तः पवित्र हैं, अथवा जो युधिष्ठिरादिकों का मंत्री है। **ऊर्जितः**—जो बलपूर्वक गोवर्धनधारी है। **अतीन्द्रः**—जो इन्द्र का दमन कर पारिजात वृक्ष का हरण करने वाला है। **संग्रहः**—जो भक्तों को ग्रहण करने वाला है। **सर्गः**—जो कार्यरूप है। **धृतात्माः**—जो अनेक रूप से आत्मा को धारण करने वाला है। **नियमः**—जो अपने-अपने अधिकार में प्रजाओं को लगाने वाला है। **यमः**—जो अन्तर्यामी होकर सबको अपने-अपने अधिकार में प्रेरित करने वाला है॥३०॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ।३१।

वैद्योः—जो अज्ञात होने से जानने योग्य हैं। **वैद्य**—जो समस्त का

करने वाला होकर भी वस्तुतः अकर्ता है। **वीरहः**—जो वीर दैत्यों का नाश करने वाला है। **माधवः**—जो भगवद् विद्या का ईश्वर है। **मधुः**—जो शहद के समान अधिक प्रीति को पैदा करने वाला है अथवा जो बसन्त ऋतु के समान प्रीति को उत्पन्न करने वाला है। **अतीन्द्रियः**—जो इन्द्रियों से जानने लायक नहीं है। **महामायः**—जो मायावियों को भी मोहित करने वाली माया को धारण करने वाला है, अथवा जो बड़ी माया को करने वाला है। **महोत्साहः**—जो महान उत्साह वाला है। **महाबलः**—जो बालरूप होकर भी पूतना आदि के वध के लिए महान बलशाली है।।३१।।

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ।३२।

महाबुद्धिः—जो महान् बुद्धिशाली है। **महावीर्यः**—जो अबिद्यारूप पराक्रमशाली है। **महाशक्तिः**—जो महान शक्तिशाली है। **महाद्युतः**—जो महान् कान्तिशाली है। **अनिर्देश्यवपुः**—जो ऐश्वर्य लक्षण वाली श्री से नित्य शोभित है। **अमेयात्माः**—जो चिद्रूप होने से चित्त का विषय नहीं है। **महाद्रिधृकः**—जो गोरक्षा के लिए महान् गोवर्धन या समुद्र मन्थन के लिए मन्दर पर्वत को धारण करने वाला है।।३२।।

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ।३३।

महेष्वासः—जो महान् धनुष को धारण करने वाला है। **महीभर्ताः**—जो पृथ्वी को धारण तथा पोषण करने वाला है। **श्रीनिवासः**—जो लक्ष्मी का निवास स्थान है। **सतां गतिः**—जो

सत्पुरुषों से प्राप्त करने लायक है। **अनिरुद्धः**—जो कभी किसी शत्रु से कहीं पर भी रोके जाने वाला नहीं है। **सुरानन्दः**—जो देवताओं को आनन्द देने वाला है। **गोविन्दः**—जो नष्ट हुई पृथ्वी को प्रथम प्राप्त करेन वाला है, अथवा जो इन्द्रादि देवता, गौ, वाणी का मालिक है। **गोविदा पतिः**—जो वेदवाणी को जानने वाला है, उनका रक्षक है।

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः।३४।

मरीचिः—जो दुष्टों का नाश करने वाला है। **दमनः**—जो दुष्टों का दमन करने वाला है। **हंसः**—जो शुद्ध है, जो सत् असत् विवेचन में, दुग्ध जल विवेचन में हंस के समान है, जो संसार बन्धन का नाशकर्ता है। **सुपर्णः**—जो गरुड़ स्वरूप है। **भुजगोत्तमः**—जो सर्पों में श्रेष्ठ शेषरूप है। **हिरण्याभः**—जिसके नाभि में ब्रह्मण्ड है। **सुतपाः**—जो नारायणरूप से सुन्दर तपशाली है। **पद्मनाभः**—जो कमल के समान गोल नाभि वाला है। **प्रजापतिः**—जो प्रद्युम्नादि का मालिक है॥३४॥

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा।३५।

अमृत्युः—जो मृत्यु रहित है। जो सबको देखने वाला है। **सिंहः**—जो दन्तवक्त्र आदि के मारने के लिए सिंह के समान पराक्रमशाली है। **सन्धाता**—जो युधिष्ठिर का दूतरूप होकर सन्धि (मेल) का कराने वाला है। **सन्धिमानः**—जो लोक में आनन्दित होने के लिए दौत्य कर्म करेन वाला है। **स्थिरः**—जो भक्तों के अन्तःकरण में स्थिर होकर रहने वाला है। **अजः**—जो बकरा के समान है,

अथवा जो शिशुपालवध के लिए चक्र को चलाने वाला है। **दुर्मर्षणः**—जो संग्राम में देवता, मनुष्य, गन्धर्व, असुर, सर्प आदि के सहन के योग्य नहीं है। **शास्ता**—जो दुष्टों को दण्ड देने वाला है। **विश्रुतात्मा:**—जो शास्त्र में प्रसिद्ध विराट् देह को धारण करेन वाला है। **सुरारिहा:**—जो देवशत्रु नरकासुर आदि का नाश करने वाला है।।३५।।

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः।३६।

गुरु—जो उपदेष्टा है, अथवा जो अज्ञान को हरण करने वाला है। **गुरुत्तमः**—जो उपदेष्टाओं में श्रेष्ठ है। **सत्यः**—जो भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में बाधित नहीं है। **सत्यपराक्रमः**—जो अबाधित सामर्थ्य वाला है। **निमिषः**—जो अच्छी तरह देखने वाला हे। **अनिमिषः**—जो नेत्र तथा वरौनी वाले प्राणी के समान दर्शन, कभी अदर्शन धर्म वाला नहीं है। **स्रग्वीः**—जो वैजयन्ती माला को धारण करने वाला है। **वाचस्पतिः**—जो वेदरूपों वाणी का मालिक है। **उदारधीः**—जो श्रेष्ठ बुद्धि वाला है अथवा **वाचस्पतिरुदारधीः**—जो वेदरूप वाणी का मालिक है और उदार बुद्धि वाला है।।३६।।

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्।३७।

अग्रणीः—जो सबों में प्रथम पूजित हो। **ग्रामीणः**—जो मथुरा में स्थित जनसमुदाय को समुद्र में ले जाकर द्वारका बसाने वाला है, अथवा जो श्रेष्ठ है। **श्रीमान्:**—जो ऋचा, साम, यजु आदि रूप श्री वाला है। **न्यायः**—जो श्रुति स्मृति, पुराण के तात्पर्य के द्वारा जाना

जाता है। नेता—जो कर्म के फल को देने वाला है। समीकरण:—जो अच्छी तरह बातचीत करने वाला है। सहस्रमूर्द्धा:—जो हजार सिर वाला है। विश्वात्मा:—जो विराटरू से विश्व का आत्मास्वरूप है। सहस्राक्ष:—जो सबका अधिष्ठात होने से हजार नेत्र वाला है। सहस्रपात—जो हजार पैर वाल है।।३७।।

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ।३८

आवर्त्तनः—जो धर्म की रक्षा के लिए बारम्बार अवतार धार करता है। निवृत्तात्माः—जो अत्यन्त विरक्त है। अथव अनिवृत्तात्माः—जो अत्यन्त विरक्त है। अथवा अनिवृत्तात्माः—ज पतियों से रोके जाने पर भी नहीं रुकने वाली ब्रज की स्त्रियों में म को लगाने वाला है। संवृत्ति—जो योगमाया से आच्छादित (घि हुआ) है। संप्रदर्मनः—दुष्टों का अच्छी तरह मर्दन करने वाला है। अहसंवर्तकः—जो सूर्यरूप से दिन का बर्ताव करने वाला है। बह्निः—जो देवताओं के छवि को अग्निरूप से वहन करने वाल है। अनिलः—जो कंस को मारकर इला (पृथ्वी) को उग्रसेन के लि देने वाला है, अर्थात् जो पृथ्वी का स्वामी होने वाला नहीं है। अथ जो रुक्मणी में चित्त लग जाने से शयन नहीं करता है। धरणीधरः—जो पृथ्वी का धारण करने वाला है।।३८।।

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुः जह्नुर्नारायणो नरः ।३९

सुप्रसादः—प्रसन्न होकर सब कुछ देने वाला है। प्रसन्नात्मा—

भक्तों से अपराध होने पर भी प्रसन्न मन वाला है। **विश्वधृक:**—जिसमें विश्व अच्छी तरह वास करे, अथवा जो विश्व को धारण करे। **विश्वभुक्**—जो विश्व का पालन करने वाला है। **विभु:**—जो अनेक रूप होकर प्रकट होता है। **सत्कर्त्ता:**—जो धर्म की रक्षा के लिए गौ तथा ब्राह्मणों की पूजा करता है। **सत्कृत:**—जो पूजितों से सदा पूजित रहता है। **साधु:**—जो न्याययुक्त कर्मों से परकार्य का साधन करता है। **जह्नु:**—जो संहार काल में प्राणियों का नाश करने वाला है, अथवा जो गंगा का पानकर बाद में त्याग करने वाला जह्नु रूप है। **नारायण:**—जो तत्वों का आश्रय है, अथवा जल का आश्रय है। **नर:**—जो प्राणियों को कर्म में लगाने वाला है अथवा कर्मफल देने वाला है।।३९।।

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।

सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ।४०।

असंख्येय:—जो किसी तरह कहा नहीं जा सकता है, अर्थात् जो शब्द तथा मन से भी नहीं जाना जाता है। **अप्रमेयात्मा:**—जिसका वाणी और मन से भी ठीक-ठीक ज्ञान न हो। **विशिष्ट:**—जो सबों में श्रेष्ठ है। **शिष्टकृत**—जो शिष्टों का करने वाला या पालन करने वला है अथवा जो अशिष्टों को भी शिष्ट बनाने बाला है। **"अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवासितो हि सः।"** इस गीता के वचन प्रमाण से। **शुचि**—जो श्रृंगार के समान शुद्ध है। **सिद्धार्थ:**—जो सिद्ध मनोरथ वाला है। **सिद्धसंकल्प**—जो सिद्ध संकल्प वाला है। **सिद्धिद:**—जो मुक्ति रूप सिद्धि देने वाला है। **सिद्धिसाधन:**—जो धर्म, अर्थ तथा काम फल आनुषंगिक रूप से सिद्धि करने वाला है।।४०।।

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ।४१

वृषाही:—जो धर्म रूप द्वादशाहादि यज्ञ वाला है। **वृषभः**—जो कामनाओं को देने वाला है। **विष्णुः**—जो लोक का आक्रमण करने वाला है। **वृषपर्वाः**—जो धर्म से प्राप्त होने वाला है। **वृषोदरः**—जो धर्म को उदर से धारण करने वाला है। **वर्द्धनः**—जो भक्तों के थोड़े किए हुए को अधिक रूप में बढ़ाने वाला है। **वर्द्धमानः**—अपने भक्तों से दिए हुए वस्तु को अपने प्रपंचरूप से बढ़ाने वाला है। **विविक्तः**—जो पवित्र है। **श्रुतिसागरः**—जो वेदों का कारण तथा तात्पर्य विषय होने से श्रुतिसागर के समान है।।४१।।

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ।४२

सुभुजः—जो सुन्दर भुजा वाला है। **दुर्धरः**—जो मुमुक्षुजनों से किया जाने वाला है। **वाग्मीः**—जो प्रशस्त वचन बोलने वाला है। **महेन्द्र**—जो महान इन्द्र है। **वसुदः**—जो धन देने वाला है। **वसुः**—जो वसु अर्थात् धनस्वरूप है, अथवा जो मथुरा में वास करने वाला है। **नैकरूपः**—जो अनेक रूपधारी है। **वृहद्रुप**—जो वराह रूप होकर पृथ्वी को धारण करने वाला है। **शिपिविष्टः**—जो यज्ञ रूप से प्रतिष्ठित है। **प्रकाशनः**—जो समस्त को प्रकाशित करने वाला है।।४२।।

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ।४३

ओजस्तेजोद्युतिधर—जो प्राणबल प्रताप तथा देह कान्ति के

धारण करने वाला है। **प्रकाशात्मा:**—जो प्रकाशरूप देहधारी है। **प्रतापन:**—जो सूर्यरूप से जगत् को संतप्त करने वाला है। **ऋद्ध:**—जो परिपूर्ण है। **स्पष्टाक्षर:**—जो स्पष्टाक्षर: अर्थात् प्राणस्वरूप हैं। **मन्त्र:**—जो विचार करने पर जाना जाय, अथवा जो मन्त्र रूप है। **चन्द्रांशु:**—जो चन्द्रमा के किरण के समान सुख को देने वाला है। **भास्करद्युति**—जो सूर्य के समान कान्ति वाला है।।४४।।

अमृताँशूद्भवो भानुः शशविन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः।४४।

अमृतांशूद्भाव:—जो समुद्रमंथन के समय चन्द्रमा को उत्पन्न करने वाला है। **भानु:**—जो दीप्तिमान है। **शशबिन्दु:**—जो चन्द्रमा होकर समस्त औषधि का पोषण करने वाला है। **सुरेश्वर:**—जो देवताओं का मालिक है। **औषधम:**—जो संसार रोग की निवर्तक होने से औषध रूप है। **जगतसेतु:**—जो जगत् को सेतु के समान करने वाला है। **सत्यधर्मपराक्रम:**—जो सत्य धर्म अर्थात् ज्ञानादि गुण तथा पराक्रम को धारण करने वाला है।।४४।।

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः।४५।

भूतभव्यभवन्नाथ:—जो भूत् भविष्य तथा वर्तमान कालत्रय के मालिक हैं। **पवन:**—जो वायु के समान है। **पावन:**—जो पवित्र करने वालों में श्रेष्ठ है। **अनल:**—जो समस्त जीवों का समूहरूप है अथवा जो अग्नि के समान है। **कामहा:**—जो भक्तों के विषयाभिलाषी कामनाओं का नाश करने वाला है। **कामकृत:**—जो प्रद्यम्न को पैदा करने वाला है। **कान्त:**—जो सुन्दर है। **काम:**—जो मुमुक्षु जनों का

प्रिय है। **कामप्रदः**—जो कामनाओं को पूर्णरूप से देने वाला है **प्रभुः**—जो दिव्य रूप से प्रकट होने वाला है।।४५।।

युगादिकृद् युगावर्तो नैकमायो महाशनः।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ।४६।

युगादिकृतः—जो युग का आरम्भ करने वाला है। **युगावर्त्तः**—जो कालात्मा होकर सतयुगादि का प्रवर्तक है। **नैकमायः**—जो बहुत मायावी है। **महाशनः**—जो बहुत भोजन करने वाला है। **अदृश्यः**—जो ज्ञानान्द्रिय से जानने योग्य नहीं है **अव्यक्तरूपः**—जो अस्पष्ट रूप है या सत् चित्, आनन्द रूप है अथवा कारण स्वरूप है। यद्द **व्यक्तरूप**—जो स्थूलरूप से अवतार धारण करने वाला है। **सहस्रजित**—जो हजारो असुरों को जीतने वाला है। **अनन्तजित**—जो अनन्त असुरों को जीतने वाला है।।४६।।

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत् कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ।४७।

इष्टः—जो परमानन्द होने से समस्त प्राणी का इच्छा विषय है अथवा सर्वों से जो पूजित है। **शिष्टेष्टः**—जो ज्ञानियों का प्रिय है। **शिखण्डीः**—जो मयूरपिच्छ को धारण करने वाला गोपरूप है। **नहुषः**—जो माया से प्राणियों को बाँधता है। **वृषः**—जो कामनाओं को वर्षाने वाला है। **क्रोधहा**—जो भक्तों के क्रोध का नाश करने वाला है। **क्रोधकृतः**—जो दुष्टों पर क्रोध करने वाला है। **कर्ताः**—जो कार्यमात्र का करने वाला है। अथवा क्रोधक्रत्कर्ता—जो क्रोधकृत् दैत्यों का नाशकर्ता है। **विश्वबाहुः**—जो त्रलोक्यवर्ती भुजा वाला है। **महीधरः**—जो पूजा धारण करने वाला है।।४७।।

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ।४८।

अच्युतः—जो भक्तों के लिए सदा वर्तमान रहने वाला है। **प्रथितः**—जो प्रत्येक गुणों करके प्रसिद्ध है। **प्राणः**—जो मेघ के समान गम्भीर वचन से बोलने वाला है। **प्राणदः**—जो भक्तों की रक्षा के लिए प्राणों को देता है अर्थात् जो भक्तरक्षण में तत्पर रहता है। **वासवानुजः**—जो इन्द्र का छोटा भाई वामन रूप है। **अपांनिधिः**—जो समुद्ररूप है **"सरसामस्मि सागरः"** इस भगवद् वचन से। **अधिष्ठानमः**—जो इस प्रपंच का उपादान कारण है। **अप्रमत्त**—जो प्रत्येक कार्य में सावधान रहने वाला है। **प्रतिष्ठितः**—जो अपनी महिमा में प्रतिष्ठित है।।४८।।

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
बासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ।४९।

स्कन्दः—जो वायुरूप से शोषण करने वाला है। **स्कन्धरः**—जो वायु को धारण करने वाला है। **धुर्यः**—जो उत्पत्तिरूप जगत को धारण करने वाला है । **वरदः**—जो इच्छित वर को देने वाला है। **वायुवाहनः**—जो वायु के समान वेगवान् गरुड़ रूप वाहन वाला है। **वासुदेवः**—जो वासुदेव का पुत्र है अथवा जिसमें देवता वास करें। **बृहद्भानु**—जो चन्द्र, सूर्यरूप से महान किरण को धारण करने वाला है। **आदिदेवः**—जो क्रीड़ा करने वाला आदि देवता अर्थात् जो कारण होकर भी खेल करने वाला है। **पुरन्दरः**—जो शत्रुओं के पुर का नाश करने वाला है।।४९।।

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ।५०।

अशोकः—जो शोक रहित है। **तारणः**—जो भक्तों को तारने वाला है। **तारः**—जो शिशुपाल आदि दुष्टों को तारने वाला है। **शूरः**—जो पराक्रमशाली है। **शौरि**—जो शूर के वंश में उत्पन्न होने वाला है। **जनेश्वरः**—जो समस्त जनों का ईश्वर है। **अनुकूलः**—जो आत्मस्वरूप होने से सबों के अनुकूल है। **शतावर्त**—जो असंख्य बार अवतार करने वाला है। **पद्मः**—जो हाथ में कमल को धारण करने वाला है। **पद्मनिभेक्षणः**—जो कमल के समान नेत्र वाला है।।५०।।

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्।
महर्द्धि ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुड़ध्वजः।५१।

पद्मनाभः—जो कमल की नाभि वाला है। **अरविन्दाक्षः**—जो कमल के समान नेत्र वाला है। **पद्मगर्भः**—जो हृदयपद्म में गर्भ के समान उपास्य है। **शरीरभृतः**—जो अन्नरूप से शरीर का पोषण तथा प्राणरूप से शरीर का धारण करने वाला है। **महर्द्धिः**—जो बड़ी ऋद्धि वाला है। **ऋद्धिः**—जो प्रपंचरूप से वृद्ध है। **वृद्धात्माः**—जो पुरातन आत्मा वाला है। **महाक्षः**—जो महान इन्द्रिय वाला है। **गरुड़ध्वजः**—जो गरुड़ की ध्वजा वाला है।।५१।।

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हरिर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः।५२।

अतुलः—जो तुलना (उपमा) से रहित है। **शरभः**—जो शरीर में प्रत्यगात्मतया शोभमान है। **भीमः**—जिससे सब भयभीत हों अर्थात् जो सबको भय देने वाला है। **समयज्ञः**—जो जनों के समय को जानने वाला है। **हरिर्हरिः**—जो हवि को ग्रहण करने वाला है। **सर्वलक्षणलक्षण्यः**—जो समस्त प्रमाणों से होने वाले ज्ञान में कुशल

है। **लक्ष्मीवान्:**—जो नित्य लक्ष्मी को वक्षथल से धारण करने वाला है। **समितिञ्जय:**—जो संग्राम को जीतने वाला है।।५२।।

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतर्दामोदर: सह: ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशन:।५३।

विक्षर:—जो नाश रहित है। **रोहित:**—जो मत्स्य शरीर से अवतार धारण करने वाला है। **मार्ग:**—जो श्रुति वचनों के द्वारा तलाश किये जाने वाला है। **हेतु:**—जो निमित्त तथा उपदान कारण रूप है। **दामोदर:**—जो उत्कृष्ट बुद्धि वाला है। अथवा जो **दधि:**—मक्खन भाण्डभेदन के बाद यशोदा के द्वारा कमर में रस्सी के बाँधा जाने वाला है। **सह:**—जो सबको सहने वाला है। **महीधर:**—जो पर्वत रूप से पृथ्वी को धारण करने वाला है। **महाभाग:**—जो बड़ा भागवान है। **वेगवान:**—जो मन से भी अधिक वेगशाली है। **अमिताशन:**—जो समस्त का संहारकाल में अशन (भोजन) करने वाला है।।५३।।

उद्भव: क्षोभणो देव: श्रीगर्भ: परमेश्वर:।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुह:।५४।

उद्भव:—जो संसार से परे है। **क्षोभण:**—जो सदा आत्मेच्छा से प्रकृति तथा पुरुष में प्रवेश कर क्षोभ को पैदा करने वाला है। **देव:**—जो क्रीडा करने वाला है। **श्रीगर्भ:**—जो जगद्रुप श्री अर्थात् विभूति को उदर में धारण करने वाला है। **परमेश्वर:**—जो सर्वोत्तम ईश्वर है। **करणम:**—जो क्रिया की सिद्धि में अत्यनत उपकारक है। **कारणम:**—जो अन्यथासिद्ध से शून्य होकर कार्य के नियत रूप से पूर्व में रहने वाला (कर्ता स्वरूप) है। **विकर्ता:**—जो विशिष्ट रूप से कार्य को करने वाला है। **गहन:**—जो दु:ख से जाना जाए। **गुह:**—जो अपने स्वरूप को छिपाने वाला है।।५४।।

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ।५५।

व्यवसायः—जो बुद्धिरूप है। **व्यवस्थानः**—जो सबका आश्रय है। **संस्थानः**—प्रलयकाल में जहाँ समस्त जगत वास करे। **स्थानदः**—जो बैकुण्ठ आदि स्थान का देने वाला है। **ध्रुवः**—जो अनेक कार्य का कर्ता होकर स्वरूप से स्थिर **परर्द्धिः**—जो सर्वोत्कृष्ट ऋद्धि वाला है। **परमस्पष्टः**—जो स्वयं प्रकाश ज्ञान रूप है। **तुष्टः**—जो परमानन्द स्वरूप है। **पुष्टः**—जो पूर्णरूप है। **शुभेषणः**—जो समस्त जनों के सर्वार्थ (समस्त वस्तु) का देने वाला है।।५५।।

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ।५६।

रामः—योगी लोग जिसमें रमण करें अर्थात् जो योगियों को रमण कराने वाला परब्रह्म है। **विरामः**—जिसमें जगत विराम को प्राप्त हो। **विरजः**—जो रजो गुण से रहित है। **मार्गः**—जो ब्रह्मरूप मार्ग को कहने वाला है। **नेयः**—जो अपने भक्तों करके हृदय में प्राप्त किया जाए। **नयः**—जो भक्तों से प्राप्त हुआ थोड़ा भी ग्रहण करने वाला है। **अनयः**—जो अभक्तों से मिला हुआ अधिक वस्तु को भी ग्रहण करने वाला नहीं है। **वीरः**—जो युद्ध, दान, सत्य, दया वालों में श्रेष्ठ है। **शक्तिमतां श्रेष्ठः**—जो शक्तिमानों में श्रेष्ठ है। **धर्मः**—जो धर्म को कहने तथा करने वाला है। **धर्मविदुत्तमः**—जो धर्म वेत्ताओं में श्रेष्ठ है।।५६।।

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ।५७।

बैकुण्ठः—जो भक्तों का प्राप्य है। **पुरुषः**—जो पूर्ण सदन (गृह) रूप है। **प्राणः**—जो वेदरूप है। **प्राणदः**—जो ब्रह्म के लिए वेद को देने वाला है। **प्रणवः**—जो अच्छी तरह स्तुति किया जाता है। अर्थात् देवता जिसकी स्तुति करते हैं। **पृथुः**—जो व्यापक है अथवा राजा पृथुरूप है। **हिरण्यगर्भः**—जो श्रेष्ठबालक रूप है। **शत्रुघ्न**—जो शत्रुओं का नाश करने वाला है। **व्याप्तः**—जो सबों में व्यापक है। **वायुः**—जो सर्वत्र जाने वाला है। **अधोक्षजः**—जिसका इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होता ।।५७।।

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः।५८।

ऋतुः—जो बसन्त ऋतुरूप है। **सुदर्शनः**—जो शोभन दर्शन वाला है। **कालः**—जो काल स्वरूप है। **परमेष्ठी**—जो सर्वोत्तम स्थज्ञन में रहने वाला है। **परिग्रहः**—जो मुमुक्षु जनों से अन्य देवताओं का त्यागपूर्वक स्वीकार किया जाए। **उग्रः**—जो समस्त उत्कृष्ट वस्तु को निगलने वाला सदाशिव रूप है। **संवत्सरः**—जो समस्त कार्य में कालरूप से अच्छी तरह रहता है। **दक्षः**—जो आलस्य से रहित है। **विश्रामः**—जो सत्कर्म में जगत् को लगाने वाला है। **विश्वदक्षिणः**—जो विश्व में उदार है।।५८।।

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ।५९।

विस्तारः—जिसमें जगत् विस्तृतरूप से रहे। **स्थावर स्थाणुः**—जो आकाशादि पदार्थ में सर्वत्र सत् रूप से स्थिर है। **प्रमाणम्**—जो सबको ठीक रूप से जानने वाला है। अथवा सत्यवादी है। **बीजमव्ययम्**—जो इस जगत का अविनाशी कारण

(बींज) है। **अथः**—जो प्रार्थना किया जाए। **अनर्थः**—जो सर्वश्रेष्ठ परमार्थ है। **महकोशः**—जो आनन्दमय महान कोक्ष है। **महाभोगः**—जो महान सुख रुप है। **महाघनः**—जो निष्किञ्चन जनों का प्रिय है॥५९॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः।६०।

अनिर्विण्णः—जो भक्तों के कार्य के लिए सदा तत्पर रहने वाला है। **स्वदिष्टः**—जो अत्यन्त स्थूल है। **भूः**—जो सत्तारूप है अथवा **अभूः**—जो उत्पत्ति से रहित हैं। **धर्मयूपः**—जो यज्ञ का स्तम्भरूप है। **महामखः**—जो अन्य यज्ञों की अपेक्षा अधिक फल को देने वाला है। **नक्षत्रनेमिः**—जो नक्षत्रनेमी वाला चन्द्रमा के समान आह्लाद (आनन्द) देने वाला है। **नक्षत्रीः**—जो प्रशस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला है। **क्षमः**—जो थोड़े पूजन से ही अपराधों को क्षमा करने वाला है। स्कन्द पुराण में क्षमाशीलता इस प्रकार कही है—"**अपराधसहस्राणि अपराध शतानि च। यमेनैके देवशः क्षमते प्रणयार्चितः**"।इति॥ **क्षामः**—भक्तों के दुख के कारण भक्तोंसे स्मरण किए जाने पर **ऋणः**—गृहीत के समान कृश है। उद्योगपर्व में कहा भी है—"**ऋणमेतत्प्रवृद्ध मे हृदयान्नापसर्पति। यद्गोविन्देति चुक्रोश कृष्णां मां दूरवासिनम्**"॥ इति॥ **समीहनः**—जो अच्छी तरह कार्य को करने वाला है॥६०॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रम् सतां गतिः।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ।६१।

यज्ञः—जो यज्ञस्वरूप है। **इज्यः**—जो पूजित होता है। अथवा

यज्ञइज्य:—जो राजसूय यज्ञ में पूजित है। **महेज्य**—जो बड़ी पूजा से पूजित होता है। **क्रतु:**—जो अनेक क्रियाओं का करने वाला है। **सत्रम्:**—जो सत् पुरुषों की रक्षा करने वाला है। अथवा यज्ञरूप है। **सतांगति**—जो सज्जनों से प्राप्य हैं। **सर्वदर्शी:**—जो सबको देखने वाला है। **विमुक्तात्मा:**—जो विशेष रूप से दोषों से रहित आत्मा वाला है। **सर्वज्ञ:**—जो सबको जानने वाला है। **ज्ञानमुत्तमम्**—जो एक ज्ञानरूप है।।६१।।

सुव्रत: सुमुख: सूक्ष्म: सुघोष: सुखद: सुहृत: ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारण: ।६२।

सुव्रत:—जो सुन्दर व्रत धारण करने वाला है। **सुमुख:**—जो सुन्दर मुख अथवा उपाय वाला है। **सूक्ष्म:**—जो दु:ख से जाना जाता है। **सुघोष:**—जो सुन्दर शव्द वाला है। **सुखद:**—जो सुख को देने वाला है। **सुहृत:**—जो प्रत्युपकार की परवाह न करके उपकार को करने वाला है। **मनोहर**—जो मोहिनी स्त्रियों के मन को हरण करने वाला है। **जितक्रोध:**—जो क्रोध को जीतने वाला है। **वीरबाहु:**—जो प्रत्येक कार्य में समर्थ बाहुवाला है। **विदारण:**—जो नृसिंह अवतार होकर हिरण्यकश्यप को विदारण करने वाला है।।६२।।

स्वापन: स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वर:।६३।

स्वापन:—जो भक्तों को धन देने वाला है। **स्ववश:**—जो स्वाधीन रहने वाला है अथवा अपने भक्तों के आधीन रहने वाला है। **व्यापी:**—जो सबको व्याप कर रहने वाला है। **नैकात्मा**—जो अनेकों का आत्मा है अर्थात् सकल जीव में बिम्ब रूप होकर रहने वाला है।

नैककर्मकृत्—जो अनेक कर्मों का करने वाला है। **वत्सरः**—जो गौ तथा गोपियों को बछड़ा और पुत्र देने वाला है। **वत्सलः**—जो भक्तों में स्नेह करने वाला है। **वत्सी**:—जो बछड़ों को चराने वाला है अथवा जगत् का रक्षक है। **रत्नगर्भः**—जो गर्भ में रत्नों को धारण करने वाला समुद्ररूप है। **धनेश्वरः**—जो धन का मालिक है।।६३।।

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ।६४।

धर्मगुप्:—जो धर्म की रक्षा करने वाला है। **धर्मकृत्**:—जो धर्म को करने वाला है। **धर्मी**:—जो श्रेष्ठ धर्म वाला है। **सदसत्**:—जो स्थूल तथा सूक्ष्मरूप है। **क्षरम्**:—जो नाशवान् है **अक्षरम्**:—जो अविनाशी है। **अविज्ञाताः**—जो ज्ञाता नहीं है, किन्तु ज्ञानरूप है। अथवा जो अपने स्वरूप में वर्तमान गोपों को जानने वाला है। **सहस्रांशः**—जो हजार किरणों को धारण करने वाला सूर्यरूप है। **विधाता**:—जो विशेष रूप से जगत् का धारण पोषण करने वाला है। **कृतलक्षण**—जो अनन्त लक्षण वाला है।।६४।।

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ।६५।

गभस्तिनेमिः—जो चक्र के समान किरण वाला है, अर्थात् सूर्यरूप है। **सत्त्वस्थः**—जो सदा सत्त्वगुण में रहने वाला है। **सिंहः**—जो नृसिंह रूप होकर प्रकट होने वाला है अथवा जो सिंह के समान पराक्रमी है। **भूतमहेश्वरः**—जो प्राणियों तथा उत्सव का मालिक है। **आदिदेवः**—जो आदि कारणभूत देवता है। **महादेवः**—जो महान देवता है। **देवेशः**—जो देवताओं का ईश्वर है।

देवभृत:—जो देवताओ का भरण-पोषण करने वाला इन्द्ररूप है। **गुरु:**—जो ददृश्य के अन्धकार को नाश करने वाला है अथवा तत्त्वज्ञान का उपदेश करने वाला है। **देवभृद्गुरु:**—जो देवताओ के मालिक इन्द्र का भी गुरु है॥६५॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः।
शरीरभूतभृतभोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः।६६।

उत्तर:—जो सबों में श्रेष्ठ है। **गोपति:**—जो गौओं का मालिक है। **गोप्ता:**—जो गौओं की रक्षा करने वाला है। **ज्ञानगम्य:**—जो ज्ञान से ही जाना जाता है। **पुरातन:**—जो सदा रहने वाला है। **शरीरभूतभृत:**—जो शरीरधारी रूप भृतों का धारण तथा पोषण करने वाला है। **भोक्ता:**—जो जगत् का पालन करने वाला है। **कपीन्द्र:**—जो सुग्रीव को इन्द्र बनाने वाला है। **भूरिदक्षिण:**—जो बहुतों के लिए सरल स्वभाव वाला है॥६६॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः।६७।

सोमप:—जो सोमलता के रस का पान करने वाला है। **अमृतप:**—जो रामचन्द्रावतार में अनेक यज्ञों को करके देवताओं को तृप्त करने वाला है। **सोम:**—जो चन्द्रमा के समान आह्लद को देने वाला है। **पुरुजित्:**—जो बहुतों को जीतने वाला है। **पुरुषोत्तम:**—जो अनेक श्रेष्ठ पुरुषों से सेवित है। **विनय:**—जो विशेष नीति वाला है। **जय:**—जो क्रोधादिकों को जीतने वाला है। **सत्यसन्ध:**—जो सत्य प्रतिज्ञा वाला है। **दाशार्ह:**—जो दान देने लायक है अथवा जो दाशार्ह वंश में होने वाला है। **सात्वतां पति:**—जो वैष्णव शास्त्र को

जानने वालों का योग क्षेम करने वाला है अथवा जो यादव विशेष का रक्षक है जो भक्तों का योग क्षेम करने वाला है।।६७।।

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः।६८।

जीवः—जो जीवन देने वाला है। **विनयितासाक्षीः**—जो विनयिओं में रहने वाले सत्,धर्म आदि भावों का साक्षी है। **मुकुन्दः**—जो मुक्ति को देने वाला है। **अमितविक्रमः**—जो अमित पराक्रम वाला है। **अम्भोनिधिः**—जो देवता आदि की उत्पत्ति का कारण है। **अनन्तात्माः**—जो श्रीमान् बलभद्र में चित्त को लगाने वाला है। **महोदधिशयः**—जो प्रलय काल में महोदधि में शयन करने वाला है। **अन्तकः**—जो सब भूतों का अन्त करने वाला है।।६८।।

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः।६९।

अजः—जो अशुद्ध हृदय में प्रादुर्भूत नहीं होने वाला है। **महार्हः**—जो पूजा के योग्य है। **स्वाभाव्यः**—जो अपन भक्तो से चिन्तन करने लायक है। **जितमित्रः**—जो शत्रुओं को वश में करने वाला है। **प्रमोदनः**—जो सबको प्रसन्न करने वाला है। **आनन्दः**—जो सुखस्वरूप है। **नन्दनः**—जो सबको सुख देने वाला है। **नन्दः**—जो सबसे बड़ा ऐश्वर्यवान है। **सत्यधर्माः**—जो सत्यरूप धर्म का पालन करने वाला है अर्थात् दम्भ से रहित है। **त्रिविक्रमः**—जो तीनों लोकों को समान करने वाला है।।६९।।

महर्षि कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदनीपतिः।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृङ्गः कृतान्तकृत्।७०।

महर्षिः कपिलाचार्य—जो अतीन्द्रिय वस्तु को देखने वाला कपिलमुनि नामक आचार्य है। "**सिद्धानां कपिलो मुनिः**" ऐसा गीता में कहा है। **कृतज्ञः**—जो किए हुए को जानने वाला है। **मेदिनीपतिः**—जो युधिष्ठिर तथा उग्रसेन के स्वाधीन होने से और रामावतार में पृथिवीपति होने से पृथ्वी का स्वामी है। **त्रिपदः**—जो तीन पैर वाला है। **त्रिदशाध्यक्षः**—जो देवताओं का अध्यक्ष है। **महाश्रृङ्ग**—जो महान् प्रभुत्व वाला है। अथवा जो सत्स्यावतार के समय प्रलयकाल में नाव को अपने श्रृंङ्ग में बाँधकर क्रीड़ा करने वाला है। **कृतान्तकृतः**—जो सिद्धान्त को करने व्राला है। अथवा दुष्ट कर्म को नाश करने वाला है।।७०।।

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गम्भीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ।७१।

महावराहः—जो लोकोत्तर वराह रूप को धारण करने वाला है। **गोविन्दः**—जो चराने के लिए गौओं को प्राप्त करने वाला है। **सुषेणः**—जो सेना के साथ अच्छी तरह चलने वाला है। अथवा जो सुन्दर सेना वाला है। **कनकाङ्गदीः**—जो सुवर्णमय अथवा चम्पकमय बाजूबन्द को धारण करने वाला है। **गुह्यः**—जो परम रहस्य होने के क़ारण छिपाने के योग्य है। **गम्भीरः**—जो गूढ़ अभिप्राय वाला है। **गहनः**—जो अभक्तों करके दुःख से जाना जाय। **गुप्तः**—जो इन्द्रिय से अग्राह्य है अर्थात् मन वाणी भी जहाँ न पहुँचे। **चक्रगदाधरः**—जो सुदर्शन चक्र तथा कौमोदकी गदा को धारण करने वाला है।।७१।।

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुश्करा‍क्षो महामनाः ।७२।

वेधाः—जो अपने भक्तों का हित सम्पादन करने वाला है। **स्वाङ्गः**—जो भक्तों को अपने अंग के समान मानता है। **अजितः**—जो शत्रुओं से जीता न जाय अथवा **जितः**—जो भक्तों से जीता है। **कृष्णः**—जो कृष्णवर्ण है। अथवा जो हृदयान्धकार को नाश करन वाला है। **दृढ़ः**—जो समर्थ है। **सङ्कर्षणः**—जो भक्तों के दु:ख का नाश करने वाला है। **अच्युतः**—जो प्रलय होने पर भी नष्ट नहीं होता है। 'अथवा सङ्कर्षणोऽच्युतः—जो अपने भक्तों के दुखों का नाश करने वाला और स्वयं अविनाशी है। **वरुणाः**—जो स्वयं शरीर धारण करने वाला है। **वारुणः**—जो अपने पिता नन्द को लेकर वरुणलोक से आने वाला है। **वृक्षः**—जो संसार का नाश करने वाला है। अथवा अपने भक्तों के लिए कल्पवृक्ष है। **पुष्कराक्षः**—जो यशोदा से रस्सी तथा छड़ी करके धमकाये जाने पर अश्रुयुक्त नेत्र को धारण करने वाला है। **महामनाः**—जो बहुत उन्नत मन वाला है॥७२॥

भगवान् भगहा नन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः।७३।

भगवान्—जो समय, धर्म, यश, श्री, ज्ञांन और वैराग्य ये छः ऐश्वर्य वाला है। **भगहाः**—जो प्रलयकाल में ऐश्वर्य का नाश करने वाला है। **आनन्दीः**—जो नित्य आत्मानन्द सुख वाला है। अथवा भगहानन्दो जो भग अर्थात् देवविशेष के नेत्र का नाशकर्त्ता श्री महादेवजी को आनन्द देने वाला है। **वनमालीः**—जो आपादलम्बिनी माला (वनमाला) को धारण करने वाला है। **हलायुधः**— जो शत्रु को उखाड़ने वाले शस्त्र को धारण करने वाला है। **आदित्यः**—जो अदिति

के पुत्र वामन हैं। **ज्योतिरादित्यः**—जो ज्योति, प्रताप, कान्ति आदि से सूर्य के समान है। अथवा आदित्योज्योतिः—जो आदित्य अर्थात् सूर्य से भी अधिक ज्योति वाला है। **सहिष्णुः**—जो शिशुपाल के १०० अपराधों को सहने वाला है। **गतिसत्तमः**—जो शरणागत रक्षकों में श्रेष्ठ है।।७३।।

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः।७४।

सुधन्वाः—जो शारङ्ग नामक सुन्दर धनुष को धारण करने वाला है। **खण्डपरशुः**—जो शत्रुओं का नाश करने के लिए परशु को धारण करने वाला परशुराम रूप है। **दारुणः**—जो भक्तों के लिए सौम्य होकर भी दुष्टों के लिए दारुण है। **द्रविणप्रदः**—जो अपने भक्तों को धन देने वाला है। **दिवस्पृक्ः**—जो वामनावतार में विराटरूप होकर स्वर्ग को स्पर्श करने वाला है। **सर्वदद्ग्व्यासः**—व्यासरूप होकर सर्वदर्शी है। **वाचस्पतिरयोनिजः**—जो माता के गर्भ से जन्म नहीं लेने वाला और विद्या का मालिक है।।७४।।

त्रिसामा सामगः सम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठाशान्तिः परायणम् ।७५।

त्रिसागाः—जो वेदत्रय से गान किया जाने वाला है। **सामगः**—जो ब्रह्मविदरूप से सामदेव का गान करने वाला है। **सामः**—जो सामदेव रूप है **"वेदानां सामवेदोऽस्मि"** गीता में कहा है। **निर्वाणम्ः**—जो परमानन्दरूप है। **भेषजम्ः**—जो औषधिरूप है। **भिषक्ः**—जो संसार से तार देने वाली विद्या का उपदेश करने

वाला है। **संन्यासकृत:**—जो मोक्ष के लिए संन्यास को धारण करने वाला है। **शम:**—जो संन्यासियों के लिए ज्ञान का साधनरूप शम है। **शान्त:**—जो सुखों में आसक्त नहीं होने वाला शान्तरूप है। **निष्ठाशान्ति:**—जिसमें प्रलयकाल में अविद्या की निवृत्ति होने से समस्त जीव अच्छी तरह वास करते हैं। **परायणम्:**—जो आवागमन से रहित उत्तम स्थान है।।७५।।

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः।७६।

शुभाङ्ग:—जो सुन्दर अङ्गों वाला है। **शान्तिद:**—जो रागद्वेष से रहित करने वाला है। **स्रष्टा:**— जो सकल ब्रह्माण्ड का सर्जन करने वाला है। **कुमुद:**—जो पृथ्वी में प्रसन्न रहने वाला है। **कुवलेशय:**—जो कुवल अर्थात् जल में शय अर्थात् शयन करने वाला है। **गोहित:**—जो गौओं के लिए हित करने वाला है। **गोपति**—जो गौ, पृथिवी आदि का मालिक है। **गोप्ता**—जो भक्तों की रक्षा करने वाला है। **वृषभाक्ष**—जो धर्मरूप नेत्र वाला है, अर्थात् समस्त जगत का धर्म तथा अर्धम के अनुसार ही सृष्टि करने वाला है। **वृषप्रिय:**—जो धर्मप्रिय है अर्थात् जिसे धर्म प्रिय है।।७६।।

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः।७७।

अनिवृर्ती—जो लोक के लिए कर्म से हटने वाला नहीं अर्थात् कर्म को करने वाला है। **निवृत्तात्मा**—जो स्वभवत: विष्यों से निवृत्त मन वाला है। **संक्षेप्ता**—जो वेद के अर्थ को गीता में रखने वाला है। **क्षेमकृत**—जो जगत् का कल्याण करने वाला है। **शिव**—जो

स्मरणमात्र से पवित्र करने वाला है। **श्रीवत्सवक्षा**—जो श्रीवत्सचिह्न को छाती से धारण करने वाला है। **श्रीवास**—जो लक्ष्मी का वास स्थान है। **श्रीपति**—जो लक्ष्मी का पति है। **श्रीमतां वरं**—जो ब्रह्मा आदि देवताओं में श्रेष्ठ है।।७७।।

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः।७८।

श्रीद—जो यजु, सम, ऋक् वेदरूप श्री को देने वाला है। **श्रीश**—जो वेदत्रयरूप श्री का मालिक है। **श्रीनिवास**—जो शोभा का निवास स्थान है। **श्रीनिधि**—जिसमें समस्त श्री वास करे। **श्रीविभावन**—जो कर्म के अनुसार ही समस्त प्राणी को धन देने वाला है। **श्रीधर**—जो लक्ष्मी को छाती से धारण करने वाला है। **श्रीकर**—जो स्मरण करने वाले को भी लक्ष्मी देता है। **श्रेय**—जो अतिशय श्रेष्ठ परब्रह्म हैं। **श्रीमान्**—जो लक्ष्मीवान् है। **लोकत्रयाश्रय**—जो तीनों लोक का आश्रय है।।७८।।

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्माविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः।७९।

स्वक्ष—जो सुन्दर इन्द्रिय वाला है। **स्वङ्ग**—जो सुन्दर अंगों वाला है। **शतानन्द**—जो अपरिमिति आनन्द वाला है। **नन्दि**—जो आनन्द देने वाला है। **ज्योतिर्गणेश्वर**—जो ज्योतिर्गणों का ईश्वर है। **विजितात्मा**—जो स्वाधीन आत्मा वाला है। **अविधेयात्मा**—जो किसी से आज्ञा देने योग्य नहीं है। **सत्कीर्ति**—जो उत्तम शयशाली है। **छिन्नसंशय**—जो संशय रहित है।।७९।।

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः।८०।

उदीर्ण—जो सबसे श्रेष्ठ है। **सर्वतश्चक्षु**—जो सर्वत्र नेत्रों वाल है। **अनीश**—जो ईश से रहित है। अर्थात् सर्वश्रेष्ठ है **शाश्वतस्थिर**—जो समस्त देश तथा काल में रहने वाला है **भूशय**—जो सीता के अन्वेषण के समय समुद्र के तीर पृथिवी प शयन करने वाले रामचन्द्र हैं। अथवा कृष्णावतार में **व्रज**—बालक के साथ खेल करते हुए पल्लव की बनी शय्या पर शयन करने वाल है। **भूषण**—जो समस्त जगत को भूषित करने वाला है। **भूति**—जे सत्ता रूप है। **विशोक**—जो शोक से रहित है। **शोकनाशन**—जे शोक को नष्ट करने वाला है।।८०।।

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः।८१।

अर्चिष्मान्—जो किरण वाला सूर्य रूप है। **अर्चित**—जो सवों से पूजित है। **कुम्भ**—जो घर के समान अपने उदर में समस्त जगत को रखने वाला है। **विशुद्धात्मा**—जो विशुद्धात्मा वाला है। **विशोधन**—जो पापों को विशेषरूप से शोधन करने वाला है। अर्थात् पापों से मुक्त करने वाला है। **अनिरुद्ध**—जो कभी किसी से नहीं रोका जाने वाला है। **अप्रतिरथ**—जो प्रतियोद्धा से रहित है। **प्रद्युम्न**—जो उत्तम धनशाली है। अथवा प्रद्युम्न स्वरूप है अर्थात् कामदेव रूप है। **अमितविक्रम**—जो अमित पराक्रमशाली है।।८१।।

कालनेमीनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः।८२।

कालनेमिनिहा—जो कालनेमी नामक असुर को मारने वाला है। **वीर**—जो वि अर्थात, गरुड़ को ईर अर्थात् आज्ञा देने वाला है। **शौरि**—जो शूर अर्थात् वसुदेव का पुत्र है। **शूरजनेश्वर**—जो शूर जनों का भी ईश्वर है। **त्रिलोकात्मा**—जो तीनों लोक का आत्मा अर्थात् आश्रय है। **त्रिलोकेश**—जो तीनों लोक का ईश है। **केशव**—जो यूर्यादि बिम्ब में होने वाले किरणों वाला है। **केशिहा**—जो केशि नामक दैत्य को मारने वाला है। **हरि**—जो पापों को हरण करने वाला है।।८२।।

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्विरोऽनन्तो धनञ्जयः।८३।

कामदेव—जो कामदेव स्वरूप है। **कामपाल**—जो भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। **कामी**—जो भक्तों की कामना रूप कार्य वाला है। **कान्त**—जो ब्रह्मा का भी अन्त करने वाला है। **कृतागम**—जो वेद के प्रादुर्भाव का कारण है। **अनिर्देश्यवपु**—जो जाति आदि चिन्ह से रहित शरीर वाला है। **विष्णु**—जो अपनी कान्ति से पृथिवी आकाश को व्याप्त करने वाला है। **वीर**—जो श्रेष्ठ है अथवा सुभट है। **अनन्त**—जो अनन्त गुणशाली है। **धनञ्जय**—जो उत्तर कुरु को जीतकर धन लाने वाला अर्जुन रूप है "पाण्डवानां धनञ्जयः" ऐसा कहा भी है।।८३।।

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः।८४।

ब्रह्मण्य—जो तप आदि का हित करने वाला है। **ब्रह्मकृत्**—जो हयग्रीव को मारकर वेद को उत्पन्न करने वाला है। **ब्रह्म**—जो सृष्टि

के आरम्भ काल में ब्रह्म नाम से वर्तमान है। **ब्रह्म**—जो सत्तामात्र तथा मन, वचन का अविषय, आत्म संवेद्य ज्ञानरूप है। **ब्रह्मविवर्धन**—जो तप को बढ़ाने वाला है। **ब्रह्मवित्**—जो वेद अथवा तत्व को जानने वाला है। **ब्राह्मण**—जो वेद का प्रर्वतक है। **ब्रह्मी**—जो तत्व को जानने वाला है। **ब्रह्मज्ञ**—जीवरूप से ब्रह्म को जानने वाला है। **ब्राह्मणप्रिय**—जो ब्राह्मण प्रिय है॥८४॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ।८५।

महाक्रमी—जो विराट्रूप होकर बड़ा पादविन्यास करने वाला है। **महाकर्मा**—जो वृहत् कर्म करने वाला है। **महातेजा**—जो बड़ा तेजस्वी है। **महोरग**—जो श्रेष्ठ सर्प है **'सर्पाणामस्म वासुकि'** यह गीता में है। **महाक्रतु**—जो अश्वमेध क्रतुरूप है **''यथाश्वेमेध क्रतुराट्''** इति। **महायज्वा**—जो लोकसंग्रह के लिए यज्ञ को करने वाला है। **महायज्ञ**—जो महान रूप यज्ञ है **''यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि''** यह गीता में है। **महाहवि**—जो महान् हविरूप है। **''ब्रह्मार्पण ब्रह्महविर्ब्रह्ग्नो ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तय ब्रह्माकर्म समाधिना''**। यह गीता में है॥८५॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ।८६।

स्तव्य—जो स्तुति के योग्य है। **स्तवप्रिय**—जो स्तुतिप्रिय है। **स्तोत्रम्**—जो गुणप्रतिवादन शब्दरूप है। अर्थात् स्तोत्ररूप है। **स्तुति**—जो गुणकीर्तन क्रिया रूप है अर्थात् स्तुति क्रिया रूप है। **स्तोता**—जो स्तुतिकर्ता हैं। **रणप्रिय**—जो कौरव पाण्डवों का संग्रामप्रिय है। **पूर्ण**—जो अनन्त कल्याण गुण से पूर्ण है। **पूरयिता**—जो भक्तों के

कामना को पूर्ण करने वाला है। **पुण्य**—जो पुण्यरूप है। **पुण्यकीर्ति**—जो पवित्र कीर्तिशाली है। **अनामय**—जो आन्तरिक तथा ब्राह्म रोग से रहित है।।८६।।

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः।।८७।

मनोजव—जो मन के वेग के समान वेगवाला है। **"अनजदेकं मनसो जवीयः"** यह श्रुति है। **तीर्थकर**—जो अपने हाथ के स्पर्श से तीर्थ को करने वाला है। **वसुरेता**—जो सुवर्ण वीर्य वाला है। **वसुप्रद**—जो अच्छी तरह धन को हरण करने वाला है। **वसुप्रदो**—जो अच्छी तरह धन को देने वाला है। **वासुदेव**—जो वसुदेव का पुत्र है। **वसु**—जो माया करके अपने स्वरूप को आच्छादित करने वाला है। वसुमना—जो एक रूप से सर्वत्र वास करने वाला है। **हवि**—जो हविरूप है **"ब्रह्मर्पणं ब्रह्महविः"** यह गीता है।।८७।।

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः।।८८।

सद्गति—जो सत्पुरुषों की गति अर्थात् प्राप्य है। **सत्कृति**—जो उत्तम क्रिया वाला है। **सत्ता**—जो सर्वत्र प्रतीयमान अधिष्ठानरूप है अर्थात वर्तमानरूप है। **सद्भूति**—जो सत्पुरुषों को ऐश्वर्य देने वाला है। **सत्परायण**—जो सत्पुरुषों का परायण अर्थात् अभीष्ट है। **शूरसेन**—जो हनुमान जाम्बवान् आदि शूर से यक्त सेना वाला है। **यदुश्रेष्ठ**—जो यदुवंशियों में श्रेष्ठ है। **सन्निवास**—जो सत्पुरुषों का निवास स्थान है। **सुयामुन**—जो यमुना के तट पर सुन्दर गोपालों के

बीच में वर्तमान रहने वाला है। अथवा यमुना के समीप होने वाला वृन्दावन देश रूप है। अथवा यमुना के जल को सुन्दर बनाने वाला है॥८८॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापाराजितः ।८९॥

भूतावास—जो भूतों का वास स्थान है। **वासुदेव**—जो वसुदेवरू विशुद्ध सत्व में प्राप्त होने वाला है। **सर्वासुनिलय**—जो समस प्राणरूप उपाधि से युक्त जीवों का आश्रय है। **अनल**—जो अन शक्ति सम्पदा वाला है। अथवा नल—जो पारिजात आदि पुष्प तथ स्वभाव ही से सुगन्धि को धारण करने वाला है। **दर्पहा**—ज विरोधियों के दर्प को नाश करने वाला है। **दर्पद**—जो अभक्तों क दर्प (अहङ्कार) को देने वाला है। **ददृप्त**—जो अपने आनन्द क अनुभव करने वाला है अर्थात् आत्मानन्द में लीन है। **दुर्धर**—ज दुःख से हृदय में धारण किया जाता है। **अपराजित**—जो किसी स पराजित नहीं है॥८९॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्त्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ।९०॥

विश्मूर्ति—जो विश्वमूर्ति वाला है। **महामूर्ति**—जो सत चि आनन्द लक्षण वाला महामूर्ति है। **दोप्तमूर्ति**—जो ज्ञानमयी मूर्ति वाल है। **अमूर्तिमान्**—जो मूर्तिमान नहीं है। **अनेकमूर्ति**—जो भक्तों क अनुग्रहार्थ मूर्ति को धारण करने वाला है। **अवयक्त**—जो अनेक मू होकर भी अव्यक्त (अदद्श्य) है। **शतमूर्ति**—जो अनन्त मूर्ति वाल है। **शतानन**—जो अनन्त आनन (मुख) वाला है॥९०॥

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम्।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः।९१।

एक—जो सजातीय, विजातीय, स्वगत भेद से रहित और परमार्थतः एक है। **नैकः**—जो माया करके बहुत रूप है। **सव**—जो यज्ञ में सोमलता रस का पान करने वाला है। **कः**—जो सुखरूप अथवा ब्रह्म रूप है। **किम्**—जो सब पुरुषार्थ का रूप है। **यत्तत्**—जो विशेषरूप से निर्देश करने के अयोग्य ब्रह्म कहा जाता है। अथवा **यत्**—जो भक्तों के हित साधन के लिए सर्वत्र जाने वाला है। **तत्**—जो अनेक प्रकार की लीला को रचने वाला है। **पदमनुत्तमम्**—जो सर्वश्रेष्ठ स्थान कहा जाता है। **लोकबन्ध**—जो लोक (जनों) से प्रार्थना किया जाता है। **माधव**—जो लक्ष्मी का पति है। **भक्तवत्सल**—जो भक्तों पर कृपा करने वाला है॥९१॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः।९२।

सुवर्णवर्णः—जो सुवर्ण के समान वर्णमाला है। **हेमाङ्गः**—जो सुवर्ण के सदृश अंग वाला है। **"सषोऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः"** इति श्रुतिः। **वराङ्ग**जो श्रेष्ठ अङ्गों वाला है। **चन्दनाङ्गदीः**—जो चन्दन तथा अङ्गद अर्थात् बाजूबन्द को धारण करने वाला है। **वीरहाः**—धर्मरक्षा के लिए जो असुर वीरों का नाश करने वाला है। **विषमः**—जो सम व्यवहार से रहित है अर्थात् जिसके समान दूसरा नहीं है। **शून्यः**—जो समस्त धर्म से रहित है। **घृताशीः**—जो समस्त आशिषों से रहित है **अचलः**—जो पूर्ण मनोरथ होने के कारण अपने स्वरूप से चलायमान नहीं होता है। **चलः**—जो प्रत्येक प्राणी के रूप से चलने वाला है॥९२॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ।९३।

अमानीः—जो देह आदि मे तादात्म्याध्यास होने से अभिमान रहित है। **मानदः**—जो भक्तों के अभिमान को नाश करने वाला है। **मान्यः**—जो सबों से पूजित होता है। **लोकस्वामीः**—जो तीनों लोक का स्वामी है। **त्रिलोकधृक्ः**—जो तीनों लोक में धृष्ट है। अथवा तीनों लोकों को धारण करने वाला है। अथवा जो द्वारका, मथुरा, और व्रज को धारण करने वाला है। **सुमेधाः**—जो सुन्दर मेधा वाला है। **मेधजः**—जो इन्द्रयाग के निराकरण के बाद पर्वतयाग के आरम्भ काल में अन्नकूट अर्थात् अन्नराशी को खाने के लिए प्रकट होने वाला है। **धन्यः**—जो पुण्यवान् है। **सत्यमेधाः**—जो सत्य मेधा वाला है। **धराधरः**—जो शेषरूप से पृथ्वी को धारण करने वाला है।।९३।।

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्रृंगो गदाग्रजः ।९४।

तेजोवृषः—जो आदित्यरूप से वृष्टि को करने वाला है। **द्युतिधरः**—जो द्युति अर्थात् कान्ति को धारण करने वाला है। **सर्वशस्त्रभृतां वरः**—जो समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ है। **प्रग्रहः**—जो भक्तों से प्राप्त पूजा को अच्छी तरह ग्रहण करने वाला है। **निग्रहः**—जो मतवालों का नाश करने वालां है। **व्यग्रः**—जो नाश रहित है। अथवा भक्तों के आग्रह के लिए व्यग्र रहता है। अथवा **अव्यग्रः**—जो स्वस्थ रहने वाला है। **नैकश्रृङ्गः**—जो अनेक श्रृङ्गवाला है। **गदाग्रजः**—जो निगद अर्थात् वेदमन्त्र से प्रथम जायमान है। अथवा गद अर्थात् कृष्ण के छोटे भाई उनके अग्रज अर्थात् बड़े भाई हैं।।९४।।

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ।९५।

चतुर्मूर्तिः—जो विराट, हिरण्यगर्भ ईश और तुरीय ब्रह्म ये चार मूर्ति वाला है। **चतुर्बाहुः**—जो शङ्ख, चक्र, गदा तथा पद्म से युक्त चार बाहु वाला है। **चतुर्व्यूहः**—जो शरीर पुरुष, छन्दः पुरुष, वेदपुरुष और महापुरुष (ऐतरेयोपनिषद् में कहे हुए) ये चार व्यूह वाला है। **चतुर्गतिः**—जो चारों वेदों की गति है। **चतुरात्माः**—जो चतुर मन वाला है। अर्थात् चतुर है। अथवा मन, बुद्धि अहंकार और चित्त ये चार अन्तःकरण वाला है। **चतुर्भाव**—जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास इन चारो आश्रमों में प्रेम करने वाला है। **चतुर्वेदवित्ः**—जो चारों वेदों को जानने वाला है। **एकपात्ः**—जो जगत्रूप एक पाद वाला है।।९५।।

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ।९६।

समावर्त्तः—जो संसार चक्र को चलाने वाला है। **अनिवृत्तात्माः**—जो सर्वत्र वर्त्तमान है। अथवा **निवृत्तात्माः**—जो विषयों से पृथक् मन वाला है। **दुर्जयः**—जो दुःख से वश में करने लायक है। **दुरतिक्रमः**—जो दुःख से अतिक्रमण किया जाय। **दुर्लभः**—जो दुर्लभ भक्ति से ही मिलता है। **दुर्गमः**—जो दुःख से प्राप्त होता है। **दुर्गः**—जो विघ्नों के नष्ट होने पर अति दुःख से प्राप्त होता है। **दुरावासः**—जो प्राप्त होने पर भी दुःख से हृदय में स्थिर किया जाता है। **दुरारिहा**—जो दुष्टों का नाश करने वाला है।।९६।।

शुभाङ्गो लोकसारङ्ग सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ।९७।

शुभाङ्गः—जो शोभन अंगों वाला है। **लोकसारंग**—जो अंगों के देवता की उपसानाओं में लोक में भ्रमर के समान हैं। **सुतन्तुः**—जो शोभन प्रपञ्च(जगत) वाला है। **तन्तुवर्धनः**—जो प्रपञ्च को बढ़ाने वाला है। **इन्द्रकर्मा:**—जो इन्द्र के समान कर्म को करने वाला है। **महाकर्मा:**—जो पञ्भूतात्मक महान् कर्मों को करने वाला है। **कृतकर्मा**—जो कृत (भूत) कर्म वाला है। **कृतागमः**—जो चतुर्विधि पुरुषार्थों के देने में पर्याप्त वेदों वाला है॥९७॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्नाभः सुलोचनः।
अर्को वाजसनः श्रृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी।९८।

उद्भवः—जो जगत के प्रादुर्भाव का कारण है। **सुन्दरः**—जो विश्व में अतिशय सौन्दर्यवान है। **सुन्दः**—जो आर्द्र वचन बोलने वाला अर्थात् करुणाकर है। **रत्नाभः**—जो रत्नों के समान नाभि वाला है। **सुलोचनाः**—जो वेदरूप सुन्दर नेत्र वाला है। **अर्कः**—जो पूजित है। **वासजनः**—जो अन्न को देने वाला है। अथवा गोपों तथा वानरों को अन्न, मक्खन आदि को देने वाला है। **श्रृङ्गी**—जो मत्स्यावतार में श्रृंग को धारण करने वाला है। **जयन्तः**—जो जीतने वाला है। **सर्वविज्जयीः**—जो सबका प्राप्त करने वाला जयशील है॥९८॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः।९९।

सुवर्णबिन्दुः—जो सुन्दर वर्ण के अंगों वाला है। **अक्षोभ्यः**—जो विषयादिक विकारों से क्षुब्ध नहीं होता हैं। **सर्ववागीश्वरेश्वरः**—जो ब्रह्म, बृहस्पति आदि वागीश्वरों का भी मालिक है। **महाह्रदः**—जो

महान् तीर्थरूप कालीयह्द (तालाब) है। **महागर्तः**—जो महारथ है। अथवा महान् गोवर्धन पर्वत के उठाने पर पर्वत सम्बन्धित गढ़ा वाला है **"तथा निर्विविशुर्गर्तम्"** इति दशमे। **महाभूतः**—जो परमार्थतः सत्यरूप परिपूर्ण है। **महानिधिः**—जो महान् निधि के समान समस्त भूतों का स्थान है।।९९।।

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ।१००।

कुमुदः—जो पृथ्वी में प्रसन्न है। अथवा भार को हटाकर पृथ्वी को आनन्दित करने वाला है। **कुन्दरः**—जो कुन्द पुष्प के समान स्वच्छ फलों को देने वाला है। **कुन्दः**—जो कुन्द की माला को धारण करने वाला है। **पर्जन्यः**—जो मेघ के समान ताप को नाश करने वाला है। **पवनः**—जो वायु के समान वेग वाला है। अथवा **पावनः**—जो स्मरणमात्र से पवित्र करने वाला है। **अनिलः**—जो प्रेरक रहित है अर्थात् जिसका कोई प्रेरक नहीं है। **अमृतांशः**—जो देवताओं को अमृत का पान कराने वाला है। **अमृतवपुः**—जो मृत्युधर्म से रहित शरीर वाला है। **सर्वज्ञः**—जो सर्व विषयक ज्ञानवाला है। **सर्वतोमुखः**—जो सर्वत्र मुख वाला है।।१००।।

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापन ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ।१०१।

सुलभः—जो नाम का गान, नृत्य आदि मात्र से सुख से मिलता है। **सुव्रतः**—जो सुन्दर व्रत धारण करने वाला है। **सिद्ध**—जो स्वयं सिद्ध है। **शत्रुजितः**—जो काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य आदि शत्रुओं को जीतने वाला है। **शत्रुतापनः**—जो शत्रुओं को

जलाने वाला है। **न्यग्रोधः**—जो समस्त भूतों को आच्छादित करने वाला है। **उदम्बरः**—जो अन्न आदि के द्वारा पोषण करने वाला है। **अश्वत्यथः**—जो कल्प तक भी ठहरने वाला नहीं है। **चाणूरान्ध्रनिससूदन**—जो चाणूर नाम तथा अन्ध्रदेशीय कंस आदि मल्लों का नाश करने वाला है।।१०१।।

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तैवाहनः।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः।।१०२।।

सहंस्नर्चिः—जो हजार किरण वाला है। **सप्तजिह्वः**—जो सात जिह्वा वाला अग्निरूप है। (काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रमवर्णा, स्फुलिंगिनी, विश्ववरुची, ये सात अग्निजिह्वा के नाम है। **सप्तैधाः**—जो सात समिधा वाला है। **"सप्त ते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः"** यह श्रुति है। **सप्तवाहनः**—जो सात वाहन वाला सूर्य रूप है। **अमूर्तिः**—जो निराकार है। **अनघ**—जो पाप रहित है। **अचिन्त्यः**—जो चिन्तन से परे है। **भयकृतः**—जो अभक्तों को भय देने वाला है। **भयनाशनः**—जो भक्तों के भय को नाश करने वाला है।।१०२।।

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः।।१०३।।

अणुः—जो सूक्ष्म है। **बृहतः**—जो बढ़ने वाला है। **कृशः**—जो ब्रह्म कृश है। **स्थूलः**—जो अविद्या दशा में स्थूल है। **गुणभृतः**—जो कल्याण आदि गुणों को धारण करने वाला है। **निर्गुणः**—जो गुण रहित है। **महान्ः**—जो सर्वपूज्य है। **अधृतः**—जो किसी से धारण किया जाने वाला नहीं है। **स्वधृतः**—जो अपनी

महिमा में स्थित है। **स्वास्यः**—जो सुन्दर वेदरूप श्वांस से शोभित मुख वाला है। **प्राग्वंशः**—जो सबसे प्रथम वंश वाला है। **वंशवर्धनः**—जो परीक्षित की रक्षा कर पाण्डवों के वंश को बढ़ाने वाला है।।१०३।।

भारभृतत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः।१०४।

भारभृत्—जो अनन्तादि रूप से पृथ्वि के भार को धारण करने वाला है। **कथितः**—जो सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। **योगीः**—जो चित्त की वृति को रोकने वाला है। **योगीशः**—जो अन्य योगियों के समान विघ्नों से विचलित होने वाला नहीं, अतएव योगीश है। **सर्वकामद**—जो समस्त कामनाओं को देने वाला है। **आश्रमः**—जो संसाररूपी जंगल में भ्रमण करने वालों के लिए विश्रांम स्थान होने से आश्रम है। **श्रमणः**—जो अपने भक्तों के विरोधियों को दुःख देने वाला है। **क्षामः**—जो प्रलय कांल में प्रजाओं को कृश करने वाला है। **सुपर्णः**—जो सुन्दर वेदरूप पत्रों वाला है। **वायुवाहनः**—जो वायु का भी प्रेरक है।।१०४।।

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः।१०५।

धनुर्द्धरः—जो रामावतार में धनुष को धारण करने वाला है। **धनुर्वेदः**—जो धनुष के गुण तथा दोष को जानने वाला है। **दण्डः**—जो दमन करने वाला है। **दमयिताः**—जो मनु आदि राजा के रूप से प्रजाओं को दमन करने वाला है। **दमः**—जो दण्ड का फल दम रूप है। **अपराजितः**—जो अपर अर्थात अपने से अपकृष्ट जाति

की गोपनियों से जित: अर्थात् जीता जाने वाला है। **सर्वसह:**—जो समस्त शत्रुओं को सहने वाला है। **नियन्ता:**—जो समस्त का नियमन करने वाला है। **अनियम:**—जो किसी के नियम में होने वाला नहीं है। **अयम:**—जो मृत्युधर्म से रहित है।।१०५।।

सत्ववासात्त्विक: सत्य: सत्यधर्मपरायण: ।
अभिप्राय: प्रियार्होऽर्ह: प्रियकृत्प्रीतिवर्धन: ।१०६।

सत्ववान्:—जो सत्त्वगुण से सम्पन्न है। **सात्त्विक:**—जो प्रधान सत्त्वगुण से स्थित है। **ससत्य:**—जो सत्पुरुषों में साधु व्यवहार वाला है। **सत्यधर्मपरायण:**—जो सत्य तथा धर्म में तत्पर रहने वाला है। **अभिप्राय:**—जो सम्पूर्ण पुरुषार्थ की कामना वालों से अभिलषित है। **प्रियार्ह:**—जो प्रिय वस्तु के योग्य है। **अर्ह:**—जो स्वागत, आसन, पाद्य आदि पूजा के भी योग्य है। **प्रियकृत:**—जो भक्तों के सुख को हरने वाला है। **प्रीतिवर्धन:**—जो विषयों में आसक्त भक्तों के प्रेम को अपने में लगाने के लिए छेदन करने वाला है।।१०६।।

विहायसगतिर्ज्योति: सुरुचिर्हुतभुग्विभु: ।
रविर्विरोचन: सूर्य: सविता रविलोचन: ।१०७।

विहायसगति:—जो आकाश में गति रखने वाला है। **ज्योति:**—जो ज्यतिरूप है। **सुरुचि:**—जो सुन्दर कान्ति वाला है। **हुतभुक:**—जो समस्त देवता के उद्देश्य से हुत वस्तु का स्वयं भोक्ता है। **विभु:**—जो व्यापक है। **रवि:**—जो रस का ग्रहण करने वाला है। अथवा श्रृंगारादि रस का ग्रहण करने वाला है। **विरोचन:**—जो विशेषरूप से शोभित है। **सूर्य**—जो आकाश में चलनें वाला है। **सविता:**—जो जगत को पैदा करने वाला है। **रविलोचन:**—जिसके सूर्यनारायण नेत्र हैं।।१०७।।

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ।१०८।

अनन्त—जो अनन्त विभूति वाला है। **हुतभुकः**—जो अग्निरूप से हुत पदार्थ का भोजन करने वाला है। **भोक्ताः**—जो कृष्णावतार में नवनीत, दधि आदि का भोजन करने वाला है। **सुखदः**—जो अभक्तों के सुख का नाश करने वाला है। **अनेकजः**—जो अनेक देश अथवा भक्तों से जायमान है। **अग्रजः**—जो हिरण्यगर्भरूप से प्रथम जायमान है **"हिरण्यगर्भः समवर्ततग्रे"** यह श्रुति है। **अनिर्विण्णः**—जो शिथिल प्रयत्न वाला नहीं है **"अनिर्वदः" श्रियो मूलम्"** यह विदुरोक्ति है। **सदामर्षीः**—जो साधु पुरुषों के लिए क्षमा करने वाला है। **लोकाधिष्ठानमः**—जो लोकों का अधिष्ठान है। **अद्भुतः**—जो अनेक शक्तिशाली होने से अद्भुत है।।१०८।।

सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः ।
स्वस्तिदःस्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ।१०९।

सनात्ः—जो चिरकालस्वरूप है। **सनातनतमः**—जो ब्रह्मदि देवताओं का भी कारण है। **कपिलः**—जो वडवानल रूप को धारण करने वाला है। अथवा कर्दमे देवहूति में कपिल नाम से जन्म लेने वाला है। अथवा वराहरूप है **'कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च'**। **अव्ययः**—जो नाशरहित है। **स्वस्तिदः**—जो भक्तों के लिए कल्याणरूप है। **स्वस्तिः**—जो कल्याणरूप है। **स्वस्तिभुक्**—जो भक्तों के मंगल का पालनहार है। **स्वस्तिदक्षिणः**—जो कल्याण के विषय में शीघ्र करने वाला है।।१०९।।

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ।११०।

अरौद्रः—जो भयानक कर्म करने वाला नहीं है। **कुण्डली:**—जो कुण्डलों को धारण करने वाला है। **चक्री:**—जो यादव गण से शोभित है **विक्रमी:**—जो विक्रमशाली है। **ऊर्जितशासनः**—जो वलयुक्त शासन करने वाला है। **शब्दातिगः**—जो शब्दों से भी परे है "यतो वाचो निवर्तन्ते" यह श्रुति है। यह श्रुति है। **शब्दसहः**—जो अपने में शब्दों के तात्पर्य को करने वाला है। "वेदैश्च सर्वैरहमेब वेद्यः" इति। **शिशिरः**—जो संसार के ताप को नाश करने वाला है। **शर्वरीकरः**—जो मुक्ति तथा भुक्ति पदार्थ को देने वाला है॥११०॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥१११।

अक्रूरः—जो क्रूर प्रकृति का नहीं है अर्थात सरल स्वभाव है। **पेशलः**—जो कर्म, मन, वचन और शरीर से सुन्दर है। **दक्षः**—जो शीघ्र कार्य करने वाला है। **दक्षिणः**—जो सरल स्वभाव वाला है। **क्षमिणांवरः**—जो क्षमाशीलों में श्रेष्ठ है। **विद्वत्तमः**—जो सदा पूर्ण ज्ञानवान् है। **वीतभयः**—जो भय रहित है। **पुण्यश्रवणकीर्तनः**—जो नामश्रवण तथा कीर्तन से पुण्य की वृद्धि करने वाला है॥१११॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः।११२।

उत्तारणः—जो संसार से उद्धार करने वाला है। **दुष्कृतिहारः**—जो दुष्ट आकृति का नाश करने वाला है। **पुण्यः**—जो पुण्य को करने वाला है। **दुःस्वप्ननाशनः**—जो स्मरणमात्र से दुःस्वप्न को नाश करने वाला है। **वीरहाः**—जो विविध प्रकार की संसारगति का नाश करने

वाला है। **रक्षणः**—जो रक्षण करने वाला है। **सन्तः**—जो सन्मार्गवर्तियों के रूप से विद्या तथा विनय की वृद्धि के लिए वर्तमान रहता है। अथवा भक्तों के लिए आत्मा तक देने वाला है। **जीवनः**—जो जीवन देने वाला है। **पर्यवस्थितः**—जो विश्व को व्याप्त करके स्थित है॥११२॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रो गंभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ।११३।

अनन्तरूप—जो अनन्तरूप होकर अर्थात् जगद्रूप होकर स्थित है। **अनन्तश्रीः**—जो अनन्त श्री वाला है। अथवा अनन्त श्रीरूप है। **जितमन्युः**—जो क्रोध को जीतने वाला है। **भयापहः**—जो भय का नाश करने वाला है। **गंभीरात्माः**—जो गम्भीर मन वाला है। **विदिशः**—जो भक्तों को अनेक प्रकार के फलों को देता है। **व्यादिशः**—जो विशेष रूप से आज्ञा देने वाला है। **दिशः**—जो वेदरूप से कर्म तथा फलों का उपदेश करने वाला है॥११३॥

अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ।११४।

अनादिः—जो कारण से रहित है। **भूः**—जो पृथ्वी के समान सबका आश्रय है। **भुवोलक्ष्मीः**—जो पृथ्वी का शोभारूप है। **सुवीरः**—जो सुन्दर वीर पुत्रों वाला है। **रुचिरांगदः**—जो सुन्दर बाजूबन्द को धारण करने वाला है। **जननः**—जो प्रद्युम्न आदि को पैदा करने वाला है। **जनजन्मादिः**—जो जन्यमान प्राणियों की उत्पत्ति का आदि कारण है। **भीमः**—जो भय का कारण है। **भीमपराक्रमः**—जो भयंकर पराक्रम वाला है॥११४॥

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः प्रणः ।११५।

आधारनिलयः—जो पृथिव्यादि पञ्चभूतों का भी आधार है। **अधाताः**—जो स्वयं आधार रहित है अथवा धाताः—जो प्रलयकाल में जगत् को पान करने वाला है। **पुष्पहासः**—जो पुष्प के समान आह्लादजनक ह्रास वाला है। **प्रजागरः**—जो सदा सर्वविषयक ज्ञानवान् है। **ऊर्ध्वगः**—जो सबसे ऊपर बैकुण्ठ लोक में गमन आदि व्यवहार करने वाला है। **सत्पथाचारः**—जो स्वयं भी लोकसंग्रहार्थ सत् मार्गका आचरण करने वाला है। **प्राणदः**—जो प्राणों को देने वाला है। **प्रणवः**—जो स्तुति किया जाने वाला है। अथवा ओंकार स्वरूप है। **पणः**—जो भक्तों से व्यवहार किया जाने वाला है।।११५।।

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ।११६।

प्रमाणम्—जो यादवों का मर्यादारूप है। **प्राणनिलयः**—जो जीवों का आधार है। **प्राणभूत**—जो अन्नादिरूप से प्राण की रक्षा करने वाला है। **प्राणजीवनः**—जो बृजवासी प्राणियों का जीवन रूप है। **तत्वम्**—जो अबाधित रूप है **'तत्वं पर योगिनाम्'** इति दशमे। **तत्ववित्**—जो जीवरूप होकर तत्व को जानने वाला है। **एकात्माः**—जो एक आत्मारूप है। **जन्ममृत्युजरातिगः**—जो जन्म मृत्यु, जरा आदि ६ भाव विकारों से रहित है।।११६।।

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सपिता प्रपितामह ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ।११७।

भूर्भुवः स्वरतरुः—जों तीनों लोकों को कल्पवृक्ष के समान अभीष्ट फल को देने वाला है। **तारः**—जो भक्तों को तारने वाला है। **सपिताः**—जों सर्व साधारण का लोकोत्तर पिता है। **प्रपितामहः**—जो ब्रह्म का पिता है। **यज्ञः**—जो पूजन किया जाता है। **यज्ञपतिः**—जो यज्ञों का पालन करने है। **यज्वाः**—जो यंज्ञ करने वाला है। **यज्ञाङ्गः**—जो यज्ञरूप अङ्ग वाला है। **यज्ञवाहनः**—जो यज्ञों के फलों को देने वाला है॥११७॥

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ।११८।

यज्ञभृत्ः—जो यज्ञ को धारण करने वाला है। **यज्ञकृत्ः**—जो कल्प के अन्त में यज्ञ का नाश करने वाला है। **यज्ञीः**—जो यज्ञ करने वालों में प्रधान है। **यज्ञभुक्ः**—जो देवता रूप से यज्ञ में भोजन करने वाला है। **मज्ञसाधनः**—जो राजा युधिष्टिर के यज्ञ का साधन करने वाला है। **यज्ञान्तकृत्ः**—जो अपने स्वरूप के साक्षात्कार से यज्ञों का अन्त करने वाला है। **"क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दद्ष्टे परावरे"** यह श्रुति है। **यज्ञगुह्यम्ः**—जो यज्ञों में फलस्वरूप विरले ही से जाना जाता है। **अन्नम्ः**—जो भोग्यरूप अन्न है। **अन्नादः**—जो अन्नों का भोक्ता है॥११८॥

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः।११९।

आत्मयोनिः—जो आत्मा ही जगत् का उपादानकारणरूप है। **स्वयंजातः**—जो निमित कारणरूप भी है **वैखानः**—जो वराहरूप को धारण कर पृथिवी को खोदता हुआ पातालवासी हिरण्याक्ष का वध

करने वाला है। **सामगायनः**—जो सामवेद का गान करने वाला है। **देवकीनन्दनः**—जो देवकी का पुत्र है। **स्रष्टाः**—जो सब कार्यों का सर्जनहार है। **क्षितीशः**—जो पृथिवी का मालिक रामचन्द्ररूप है। **पापनाशनः**—जों कीर्तन पूजन ध्यान से पापों का नाश करने वाला है॥११९॥

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः॥१२०॥

सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः।

शङ्खभृत्:—जो पाञ्चजन्य शङ्ख को धारण करने वाला है। **नन्दकीः**—जो नन्दक नामक तलवार को धारण करने वाला है। **चक्रीः**—जो सुदर्शन चक्र को धारण करने वाला है। **शारङ्गधन्वाः**—जो शारङ्गनामक धनुष को धारण करने वाला है। **गदाधरः**—जो कौमोदकी गदा को धारण करने वाला है। **रथाङ्गपाणिः**—जो कौरव तथा पाण्डव के युद्ध में अशस्त्र होकर युद्ध करने की प्रतिज्ञा करने के बाद भीष्म द्वारा पीड़ित होकर रथ की पहियां को धारण करने वाला है। **अक्षोभया**—जो शत्रुओं से कभी क्षुब्ध होने वाला नहीं है। **सर्वप्रहरणायुधः**—जो समस्त आयुध को धारण करने वाला है॥१२०॥

॥ सर्वप्रहरणायुध ॐ नमः ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानाशेषेण प्रकीर्तितम्॥१२१॥

कीर्तन के योग्य महात्मा केशव के एक हजार दिव्य नामों का अच्छी तरह कीर्तन किया॥१२१॥

य इदं श्रृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः।१२२।

जो इन नामों को नित्य सुनता है और जो कीर्तन करता है वह इस लोक में तथा परलोक में (राजा नहुष के समान) किञ्चित भी अशुभ फल को नहीं पाता अर्थात् शुभ फल का ही भागी होता है।।१२२।।

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत्।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात्।१२३।

ब्राह्मण वेदान्त का जानने वाला, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धन-समृद्धि और शूद्र सुख का भागी होता है।।१२३।।

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम्।१२४।

धर्म चाहने वाला धर्म को, धन चाहने वाला धन को, कामी कामनाओं को और प्रजा चाहने वाला प्रजा को प्राप्त करता है।।१२४।।

भक्तिमान्यः सदोत्थाय सुचिस्तद्गतमानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतात्प्रकीर्तयेत्।१२५।

जो भक्त् उठकर पवित्र होकर वासुदेव भगवान में मन लगाकर वासुदेव के सहस्रनाम का कीर्तन करेगा।।१२५।।

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्रधान्यमेव च।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम्।१२६।

वह बहुत यश, जाति में प्रधानता, अचल लक्ष्मी और सर्तोत्तम कल्याण (मोक्ष) को प्राप्त करता है।।१२६।।

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति।
भवत्यरोगी द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः।१२७।

भय कहीं नहीं होता, वीर्य तथा तेज को प्राप्त करता है। रोगरहित, कान्तिमान, बल रूप, गुणों से युक्त होता है।।१२७।।

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः।१२८।

रोग से पीड़ित रोग से, कैदी कैद से, डरा हुआ डर से और आपद वाला आपदा से मुक्त होता है।।१२८।।

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ।१२९।

पुरुष भक्तियुक्त होकर पुरुषोत्तम भगवान की सहस्रनाम से नित्य स्तुति करता हुआ बड़े दुःखों को शीघ्र पार कर ले जाता है। ।१२९।।

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्व पापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ।१३०।

वासुदेव की शरण होकर वासुदेव में परायण होकर मनुष्य सब पाप से छूटकर सनातन ब्रह्म को प्राप्त होता है।।१३०।।

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधि भयं नैवोपजायते ।१३१।

वासुदेव के भक्तों को कहीं अशुभ नहीं होता और जन्म, मृत्यु जरा, व्याधि और भय भी नहीं होता।।१३१।।

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्ति श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ।१३२।

जो श्रद्धा और भक्ति से युक्त होकर इस स्तोत्र को पढ़ता है वह आत्मसुख, शान्ति, श्री, धृति, स्मृति, कीर्ति से युक्त हो जाता है।।१३२।।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानं पुरुषो मे ।१३३।

पुरुषोत्तम भगवान् के पुण्यात्मा भक्तों को क्रोध, ईर्षा, लोभ, अशुभ गति नहीं होती है।।१३३।।

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्राः खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः।१३४।

महात्मा वासुदेव के बल पराक्रम से स्वर्ग, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्रमण्डल, आकाश, दिशा, पृथिवी, समुद्र आदि धारण किये हैं।।१३४।।

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम्।१३५।

सुर, असुर, गन्धर्व, यक्ष उरा, राक्षस आदि चराचर समस्त जगत् कृष्ण के वंश में हैं।।१३५।।

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञं एव च।१३६।

पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय, मन, बुद्धि, सत्त्व, तेज, बल, वृति, क्षेत्र, क्षेत्रज्ञ, ये सब वासुदेव स्वरूप हैं।।१३६।।

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः।१३७।

सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रथम आचार (शौच, स्नान, सन्ध्या, वन्दनादि) कहा गया है क्योंकि आचार से धर्म, धर्म से अच्युत भगवान फलदाता होते हैं।।१३७।।

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ।१३८।

ऋषि, पितर, देवता, महाभूत, धातु, जङ्गम, स्थावर, जगत् ये सब नारायण से उत्पन्न हैं॥१३८॥

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादिकर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञान मेतत्सव, जनार्दनात्।१३९।

योग अर्थात् योगास्त्र, ज्ञान अर्थात् उपासना शास्त्र, सांख्यशास्त्र, विद्या-वैशेपिकादि, तन्त्र, शिल्यादि, कर्म-कर्मविद्या, वेद, शास्त्र, विज्ञान-अहंब्रह्मास्मि ज्ञान, ये सब जनार्दन भगवान् से उत्पन्न हैं॥१३९॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूंतान्यनेकशः।
त्रींल्लोकान् व्याप्त भूतात्मा भुङ्क्ते विश्व भुगव्ययः।१४०।

एक विष्णु जो भूतात्मा, विश्वभोक्ता अव्यय है। वह महते उत्पन्न तथा अनेक भूतों को और तीन लोक को व्याप्त कर उपभोग करता है॥१४०॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च।१४१।

भगवान् विष्णु के इस स्तोत्र को व्यास जी ने कहा है—जो पुरुष कल्याण तथा सुख प्राप्ति के लिए पढ़ता है व इच्छा करता है॥१४१॥

विश्वेश्वरमं देवं जगतः प्रभवाप्ययम्।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम्।१४२।

ज़ो विश्वेश्वर, अज, देव, जगत के उत्पत्ति तथा नाशकर्ता कमलनेत्र भगवान का भजन करते हैं वे पराभाव को प्राप्त नहीं होते हैं॥१४२॥

।।अथ श्री नारायण (विष्णु) कवचम्।।

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः रिपुसैनिकान् ।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम् ।१।
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम् ।
यथाऽततायिनः शत्रून् येन गुप्ताऽअजयन्मृधे ।२।

।।श्री शुक उवाच।।

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते ।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ।३।

।।विश्वरूप उवाच।।

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः ।
कृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः ।४।
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते ।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि ।५।
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादिकारादीनि विन्यसेत् ।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा ।६।
करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया ।
प्रणवादियकारान्तमंगुल्यंगुष्ठर्वसु ।७।
न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि ।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत् ।८।
वेकारं नेत्रयोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु ।

मकारमस्त्रमुद्दश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः ।९।
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत् ।
ॐ विष्णवे नम इति ।१०।
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम् ।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ।११।
ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे ।
दरारिचर्मासिगदेषुचापपाशान्
दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहु ।१२।
जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात् ।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ।१३।
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः ।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ।१४।
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः ।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान ।१५।
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात् ।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धनात् ।१६।
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात् ।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ।१७।
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद् द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा ।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद् बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ।१८।
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात् ।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः ।१९।
मां केशवो गदया प्रातरव्याद् गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः ।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ।२०।
देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं त्रिधामावतु माधवो माम् ।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ।२१।
श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः ।

दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ।२२।
चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम् ।
दंदग्धिदंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः ।२३।
गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिंगे निष्पिण्ढि निष्पिण्ढयजितप्रियासि ।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ।२४।
त्वं यातुधानप्रेमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन् ।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितोभीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ।२५।
त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम् ।२६।
यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ।२७।
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तवान् ।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ।२८।
गरूड़ो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः ।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ।२९।
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः ।
बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षद्भूषणाः ।३०।
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् ।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः ।३१।
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् ।
भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया ।३२।
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः ।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ।३३।
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः ।
प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ।३४।
मघन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् ।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ।३५।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ।३६।
न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कहिंचित्।३७।
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौसिको धारयन् द्विजः।
योगधारणा स्वांगं जहौ स मरुधन्वनि ।३८।
तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा ।
ययौ चित्ररथः स्त्रीर्भिवृतो यत्र द्विजक्षयः।३९।
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः ।
स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः ।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात् ।४०।

श्रीशुक उवाच

य इदं शृणयात् काले यो धारयति चादृतः ।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात् ।४१।
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः ।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेअसुरान् ।४२।

।इति नारायण कवच सम्पूर्णम्।।

।। माध्यंन्दिनीय पुरुषसूक्तम्।।

अथ ध्यानम्। शंख चक्रगदापद्मपाणिं सजलजलदसुन्दरं संवीतपीताम्बर, कमलदललिततलोचनं। लसित्करीकुटण्डलकेयूरकंकण, रत्नखचितक्षुद्रमुद्रान्वि तकारांगुलीक, कटितटविलसद्रत्नमेखल श्रीभगवन्तं ध्यायामि। इति ध्यानम्।।

हरि- ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्रपात् । स भूमि ँ सर्वतः स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥ इति वामकरे, आवाहनं समं। पुरुषऽएवेद ँ सर्व यद्भूतं यच्च भाव्वयम् उतामृतत्वस्येशन्नो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥ इति दक्षिणाकरे, आसनं स०। एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पुरुषः। पादोऽस्य व्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥ इतिबामपादे, पाद्य सम। त्रिपादूर्ध्वर्ऽउदैत्पुरुषं पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽभि॥ दक्षिणपादे, अर्घ्यं सम०। ततो व्विराडजायतव्विराजोअअधि पुरुष। स जातोऽअत्यरिच्यत पाश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥ वामजानौ, आंचमनींय सम०। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषहाज्ज्यम्।पशूंस्तांश्चक्रे व्वायव्व्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥ दक्षिणजानौ, स्नानम् आचमनीयं सं०तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानजज्ञिरे छन्दा ँ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्तादजायत ॥७॥ बामकट्यौं, वस्त्रयुग्ममाचीयं सं०। तस्म्मादश्वाअअजायन्त ये के चौभयादतः। गावो ह जज्ञिरेत्तस्माज्जाताऽअजवायः॥८॥ दधिणकट्यां यज्ञोपवीतमाचर्रमनम् सम०। तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन्नपुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्त साद्धयाऽऋषयश्च ये॥९॥ नाभौ, चन्दनं सम०। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्प्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बहुकिमूरूपांदाअउच्चयेते॥१०॥ हृदये, पुष्पाणि स०। ब्राह्मणोअस्स्य मुखमासीद् बाहू राजन्नयः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रोअअजायत॥११॥ कण्ठे, धूपं स०। चन्द्रमा मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्योअअजायत। श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निनरजायत॥१२॥ वामवाहौ, दीपं सम०। नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्ततु। पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकांऽअकल्पयन॥१३॥ दक्षिणा वाहौ नैवेद्यं सम०। यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मअइध्मः शरद्धविः॥१४॥ मुखे नमस्कारं सम०। सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्तः समिध कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम्॥१५॥ अक्ष्णोः दक्षिणां प्रदक्षिणां च सम०। यज्ञेन यज्ञमयजन्त देबास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्धयाः सन्ति देवाः॥१६॥ शिरसि मंत्र पु० प्रदशिणां च ततः पूजान्ते क्षमाप्रार्थनां कुर्यात्, यस्य स्मृत्येत्यादि पद्यैः।

॥ अथ श्रीसूक्तम ॥

ऐं हिरण्यवर्णां हरिणीं सुबर्ण रजतस्राजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१॥ ऐं ह्रीं तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ ॐ ह्रीं ॐ श्रीं अश्व पूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुशताम्॥३॥ ॐ श्रीं ॐ क्लीं, कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥ ॐ क्लीं ॐ वदबद, चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनीमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृण॥५॥ ॐ वदवद, ॐ वाग्वादिनी, आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु यान्तरायाश्च वाह्याअलक्ष्मीः॥६॥ ॐ वाग्वादिनी ॐ ऐं, उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मिमुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिमृद्धि ददातु मे॥७॥ ॐ ऐं सौ क्षुत्यिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वान्निर्णुद में गृहात्॥८॥ ॐ सौः ॐ हंसः गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥९॥ ॐ हंस ॐ आं, मनसः काममाकूर्ति वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥१०॥ ॐ आं ॐ ह्रां कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दमः। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम्॥११॥ ह्रीं क्रीं, आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत बस में गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥१२॥ ॐ क्रीं ॐ क्लीं, आद्र पुष्कारिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्यमयीं

लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१३॥ ॐ क्लीं , ॐ आर्द्र यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह॥१४॥ ॐ श्री ह्रँ, ॐ तां मअआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योअश्वांन्विदेयं पुरुषानहम्॥१५॥ ॐ ह्रीं ॐ स्वाहा ॐ स्वाध ऐं, यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तिः पञ्चदशर्चञ्च श्री कामः सततं जपेत्॥१६॥

इति श्री सूक्तं समाप्त।

॥ अथ कनकधारा स्तवः ॥

अंगं हरेः पुलकभूषण माश्रयन्ती भृंगांगनेव मुकुलाभरणं तमालम्॥ अंगीकृताऽखिलविभूतिरपांगलीला मांगल्यदाऽस्तुमम मंगल देवतायाः॥१॥ मुग्धा मुहर्विदधती वदने मुरारेः प्रमत्रपा–प्रणिहितानि गताऽगतानि। मालादृशोर्मधुकरीव महोत्पले या सा मे श्रियं दिंशतु सागर-सम्भवायाः॥२॥विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष- मानन्द-हेतुरधिकं मुर विद्विषोअपि। ईषांन्नषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्धमिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः॥३॥आमीलिताक्ष-मधिगम्य मुदा मुंकुन्द- मानन्द-कन्दमनिमेषमनंगतन्त्रम्। आकेकर स्थित-कनीनिक पद्मनेत्रं भूत्यै भवेन्मम भुजंग-शयनांगनायाः॥४॥ बाह्वन्तरे मुरजितः श्रितकौस्तुभे या हारावलीव हरिनीलमयी विभाति। कामप्रदा भवतोऽपि कटाक्षमाला कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः॥५॥ कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारे-र्धाराधरे स्फुरति या तड़िदंगनेव॥ मातुः समस्त जगतां महनीय मूर्तिर्भद्राणि में दिशतु भार्गव- नन्दनायाः॥६॥ प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत् प्रभावान्मांगल्य भाजि मधु माथिनि मन्मथेन। मययापतेत्तदिह मन्थर मीक्षणार्ध मन्दाऽलसं च मकरालय कन्यकायाः॥७॥ दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुराधा मस्मिन्न किञ्चन विहंगशिशौं विषण्णे। दुष्कर्म धर्ममपनीय चिरायु दूरं नारायण

प्रणयिनी नयनाम्बुवाहः ॥८॥ इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्रदृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते। दृष्टिः प्रहृष्टः कमलोदर दीप्तिरिष्टां पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥ गीर्देवतेति गरुड़ध्वज सुन्दरीति शाकम्भरीति शशिशेखर वल्लभेति। सृष्टि स्थिति प्रलयकेलिषु संस्थितायै तस्यै नमस्त्रिभुवनैक गुरोस्तरूण्यै॥१०॥ श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्म फलप्रसूत्यै रत्यै नमोऽस्ति रमणीय-गुणार्णवायै। शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै, पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरषोत्तमबल्लभायै ॥११॥ नमोऽस्तु नालीनिभाननायै, नमोऽस्तु दुग्धोदधि-जन्मभूमै। नमोऽस्तु सौमामृतासोदरायै, नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥१२॥ सम्पत्कारािण सकलेन्द्रिय-नन्दनानि साम्राज्यदान-विभवानि सरोरूहाक्षि। त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥१३॥ यत्कटाक्ष समुपासना विधिः सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः। सन्तनोति वचनांगमानसैस्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥१४॥ सरसिज निलये सरोजहस्ते, धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे। भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्याम्॥१५॥ दिग्धस्तिभिः कनक कुम्भ मुखावसृष्ट स्वर्वाहिनी विमलचारु जलप्लुतांगीम्। प्रातर्नमामि जगतां जननी मशेष लोकाधिनाथ-गृहणीममृताब्धिपुत्रीम्॥१६॥ कमले कमलाक्षवल्लभे। त्वंकरुणापूर-तरंगतैरपांगै। अवलोकय म मकिञ्चनानां प्रथमं पात्रम कृत्रिमं दयायाः॥१७॥ स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरभूमिरन्वहं त्रयीमयीं त्रिभवनमांतरं रमाम्। गुणाधिका गुरुतर, भागिनो भवन्ति ते भुवि बुधि भाविताशयाः॥१८॥ सुवर्णधारा स्तोत्रं यच्छकराचार्य-निर्मितम। त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नतित्यं स कुवेरसमो भवेत्॥१९॥ पद्मप्रिये, पद्मिनि पदमहस्ते, पद्मांलये पद्मलाय ताक्षि विश्वप्रिये विष्णुमनोकुलूले त्वत्पादपद्म मयि सन्निधत्स्वम्॥२०॥ मनुजा वृत्तिसहस्त्रभाँनुसुभगाः, शुद्धोत्मनोयेजनास्तेषां मांधववल्लभा निजगृहे, स्यात्सर्वदा निश्चला। दृष्टि हेममयो प्रमोदजननी पानेव्यय-कुर्वन्ती साह्वेज्ञा वर्निता विलासकुशलां पुत्रायुरारोग्पदाम्॥२१॥

इति श्री कनधारा स्तोत्र

श्री लक्ष्मीस्तोत्रम्

जय पद्मपलाशाक्षि जयत्वं श्रीपतिप्रिये। जय मातर्महालक्ष्मि संसारार्णवतारिणि।।१।। महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।२।। पद्मालये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं च सर्वदे। सर्वभूतहितार्थाय वसुसृष्टिं सदा कुरु।।३।। जगन्मातर्नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे। दयावति नमस्तुभ्यं विश्वेश्वरि नमोऽस्तुते।।४।। नमः क्षीरार्णवसुते नमस्त्रैलोक्यधारिणि। वसुवृष्टे नमस्तुभ्यं रक्ष मां शरणागतम्।।५।। रक्षत्वं देवदेवेशि देवदेवस्य वल्लभे दारिद्रयान्त्राहि मां लक्ष्मि कृपां कुरु ममोपरि।।६।। नमस्त्रैलोक्यजननि नमस्त्रैलोक्यपावनि। ब्रह्मादयो नमन्ते त्वां जगदानन्ददायिनि।।७।। विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं जगद्धिते। आर्तिहन्त्रि नमस्तुभ्यं कुरु से समृद्धि सदा।।८।।अब्जवासे नमस्तुभ्यं चपलायै नमोनमः। चञ्चलायै नमस्तुभ्यं ललितायै नमोनमः।।९।। नमोप्रद्युम्नजननि मतिस्तुभ्यं नगोमनः। परिपालय भो मातर्मा देवि शरणागतम्।।१०।। शरण्येत्वां प्रपन्नोऽस्मि कमले कमलालये। त्राहि-त्राहि महालक्ष्मि परित्राणपरायणे।।११।। पाण्डित्यं शोभते नैव च शोभन्ति गुणा नरे। शीलत्वं नव शोभेत महालक्ष्मि त्वया विना।।१२।। तावद्विराजते रूपं तावच्छीलं विराजते। तावद् गुणा नराणां च यावल्लक्ष्मी प्रसीदति।।१३।। लक्ष्मित्वयालंकृतमानवा ये पापैर्विमुक्ता नृपलोकमान्याः। गुणैर्विहीना गुणिनो भवन्ति दुःशीलिनः शीलवतां वरिष्ठाः।।१४।। लक्ष्मीर्भूषयते रूपं लक्ष्मीर्भूषयते कुलम्। लक्ष्मीर्भूषयते विद्यां सर्वा लक्ष्मीर्विशिष्यते।।१५।। लक्ष्मित्वद्गुणकीर्तनेन सकला भूर्यात्यलं जिह्यतां रुद्राद्या रविचन्द्र देवपतयो वक्तुं च नैव क्षमाः। अस्माभिस्तव रूपलक्षणगुणान्वक्तुं कथं शक्यते। मातर्मांपरिपाहि विश्वजनके कृत्वा ममेष्टं ध्रुवम्।।१६।। दीनातिभीतं भवतापपीडितं धनैर्विहीनं तव पार्श्वमागतम्। कृपानिधित्वान्मम लक्ष्मि सत्वरं

धनप्रदानाद्धननायकं कुरु॥१७॥ मांविलोक्य जननी हरिप्रिये निर्धनं तव समीपमागतम्। देहि मे झटिति लक्ष्मि कराग्रं वस्त्रकाञ्चनवरान्नमद्भुतम्॥१८॥ त्वमेव जननी लक्ष्मि पिता लक्ष्मि त्वमेव च भ्राता त्वं च सखा लक्ष्मि विद्या लक्ष्मि त्वमेव च ॥१९॥ त्राहि-त्राहि महालक्ष्मि त्राहि-त्राहि सुरेश्वरि। त्राहि-त्राहि जगन्मातर्दारिद्र्यात्त्राहि वेगतः॥२०॥ नमस्तुभ्यं जगद्धात्रि नमस्तुभ्यं नमो नमः। धर्माधारे नमस्तुभ्यं नमः सम्पत्तिदायिनि॥२१॥ दारिद्र्यार्णवमग्नोहं विमग्नोऽहं रसातले। मज्जन्तं मां करे धृत्वा सुद्धर त्वं रमे द्रुतम्॥२२॥ किं लक्ष्मि बहुनोक्तेन जल्पितेन पुनः पुनः। अन्यन्मे शरणं नास्ति सत्यं सत्यं हरिप्रिये॥२३॥ एतच्छ्रुत्वाऽगस्तिवाक्यं हृष्ययाणा हरिप्रिया। उवाच मधुरां वाणीं तुष्टाअहं तव सर्वदा॥२४॥ लक्ष्मीरुवाच-यत्वयोक्तमिदं स्तोत्रं यः पठिष्यति मानवः। श्रृणोति च महाभागस्तस्याहं वशवर्तिनी॥२५॥ नित्यं पठति यो भक्त्या त्व लक्ष्मीस्तस्य नश्यात। ऋणं च नश्यते तीव्रं वियोगं नैव पश्यति ॥२६॥ यः पठेत्प्रातरुत्थायश्रद्धभक्ति समन्वितः। गृहे तस्य सदा तुष्टां नित्यं श्रीः पतिना सहः॥२७॥ सुखसौभाग्यसम्पन्नौ मनस्वी बुद्धिमान्भवेत्। पुत्रवान् श्रेष्ठो भोगभोक्ता च मानवः ॥२८॥ इदं स्तोत्रं महापुण्यं लक्ष्मयाऽगस्तिप्रकीर्तितम्। विष्णुप्रसादजननं चतुर्वगफल प्रदम्॥२९॥ राजद्वारे जयश्चैव शत्रोश्चैव पराजयः। भूतप्रेतपिशाचानां व्याघ्राणां न भयं तथा॥३०॥ न शस्त्रानल तोयौघाद्भयं तस्य प्रजायते। दुर्वृत्तानां च पापानां बहुहानिकरं परम्॥३१॥ मन्दिरे करिशालासु गवां गोष्ठे समाहितः। पठेत्तद्दोषशान्त्यर्थं महापातकनाशनम्॥३२॥ सर्वसौख्यकरं नृणामायुरारोग्यदं तथा। अगस्तिमुनिना प्रोक्तं प्रजानां हितकाम्यया॥३३॥

इति श्री लक्ष्मी स्त्रोत्रं सम्पूर्णम्

विष्णु सहस्र नामावलि

अर्थात्
भगवान विष्णु के १००० नाम

ॐ सच्चिदानन्दस्वरूप

१. विश्वम्	२. विष्णु	३. वषट्कार
४. भूवभव्यभवत्प्रभु	५. सूतकृत	६. भूतभृत्
७. भाव	८. भूतात्मा	९. भूतभावन
१०. पूतात्मा	११. परमात्मा	१२. मुक्तानां परमागति
१३. अव्यय	१४. पुरुष	१५. साक्षी
१६. क्षेत्रज्ञ	१७. अक्षर	१८. योग
१९. योगविदां नेता	२०. प्रधानपुरुषेश्वर	२१. नारसिंह वपु
२२. श्रीमान्	२३. केशव	२४. पुरुषोत्तम
२५. सर्व	२६. शर्व	२७. शिव
२८. स्थाणु	२९. भूतादि	३०. निधिरव्यय
३१. सम्भव	३२. भावन	३३. भर्ता
३४. प्रभव	३५. प्रभु	३६. ईश्वर
३७. स्वयम्भू	३८. शम्भू	३९. आदित्य
४०. पुष्कराक्ष	४१. महास्वन:	४२.अनादिनिधन
४३. धाता	४४. विधाता	४५. धातुरुत्तम
४६. अप्रमेय	४७. हृषिकेश	४८. पद्मनाभ
४९. अमर प्रभु	५०. विश्वकर्मा	५१. मनु
५२. त्वष्टा	५३. स्थविष्ट	५४. स्थविरो ध्रुव
५५. अग्राह्य	५६. शाश्वत	५७. कृष्ण
५८. लोहिताक्ष	५९. प्रतर्दन	६०. प्रभूत
६१. त्रिककुब्धाम	६२. पवित्रम्	६३. मंगलं परम्

६४. ईशान
६५. प्राणदः
६६. प्राण
६७. ज्येष्ठ
६८. श्रेष्ठ
६९. प्रजापति
७०. हिरण्यगर्भ
७१. भूगर्भ
७२. माधव
७३. मधुसूदन
७४. ईश्वर
७५. विक्रमी
७६. धन्वी
७७. मेधावी
७८. विक्रम
७९. क्रमः
८०. अनुत्तमः
८१. दुराधर्ष
८२. कृतज्ञ
८३. कृति
८४. आत्मवान्
८५. सुरेश
८६. शरणम्
८७. शर्म
८८. विश्वरेता
८९. प्रजाभव
९०. अह
९१. संवत्सर
९२. व्याल
९३. प्रत्यय
९४. सर्वदर्शन
९५. अज
९६. सर्वेश्वर
९७. सिद्ध
९८. सिद्धि
९९. सर्वादि
१००. अच्युत
१०१. वृषाकपि
१०२. अमेयात्मा
१०३. सर्वयोगविनिः सृत
१०४. वसु
१०५. वसुमना
१०६. सत्य
१०७. समात्या
१०८. असम्मित
१०९. सम
११०. अमोघ
१११. पुण्डरीकाक्ष
११२. वृषकर्मा
११३. वृषाकृति
११४. रुद्र
११५. बहुशिरा
११६. बभ्रु
११७. विश्वयोनि
११८. शचिश्रवा
११९. अमृत
१२०. शाश्वतस्थाणु
१२१. वरारोह
१२२. महातपा
१२३. सर्वग
१२४. सर्वविद्भानु
१२५. विष्वकसेन
१२६. जनार्दन
१२७. वेद
१२८. वेदवित
१२९. अव्यंग
१३०. वेदांग
१३१. वेदवित
१३२. कवि
१३३. लोकाध्यक्ष
१३४. सुराध्यक्ष
१३५. धर्माध्यक्ष
१३६. कृताकृत
१३७. चतुरात्मा
१३८. चतुर्व्यूह
१३९. चतुर्ष्द्र्द्र
१४०. चतुर्भुज
१४१. भ्राजिष्णु
१४२. भोजनम्
१४३. भोक्ता
१४४. सहिष्णु
१४५. जगदादिज
१४६. अनघ
१४७. विजय

१४८. जेता	१४९. विश्वयोनि	१५०. पुनर्वसु
१५१. उपेन्द्र	१५२. वामन	१५३. प्रांशु
१५४. अमोघ	१५५. शुचि	१५६. ऊर्जित
१५७ .अतीन्द्र	१५८. संग्रह	१५९. सर्ग
१६०. धृतात्मा	१६१. नियम	१६२. यम
१६३. वेद्य	१६४. वैद्य	१६५. सदायोगी
१६६. वीरहा	१६७. माधव	१६८. मधु
१६९. अतीन्द्रिय	१७०. महामाय	१७१. महोत्साह
१७२. महाबल	१७३. महाबुद्धि	१७४. महावीर्य
१७५. महाशक्ति	१७६. महाद्युति	१७७. अनिर्देश्यवपु
१७८. श्रीमान्	१७९. अमेयात्मा	१८०. महाद्रिधृक्
१८१. महेस्वास	१८२. महीभर्ता	१८३. श्रीनिवास
१८४. सतांगति	१८५. अनिरुद्ध	१८६. सुरानन्द
१८७. गोविन्द	१८८. गोविन्दापति	१८९. मरीचि
१९०. दमन	१९१. हंस	१९२. सुपर्ण
१९३. भुजगोत्तम	१९४. हिरण्यनाभ	१९५. सुतपा
१९६. पद्मनाभ	१९७. प्रजापति	१९८. अमृत्यु
१९९. सर्वध्क्	२००. सिंह	२०१. संधाता
२०२. संधिमान	२०३. स्थिर	२०४. अज
२०५. दुर्मर्षण	२०६. शास्ता	२०७. विश्रुतात्मा
२०८. सुरारिहा	२०९. गुरु	२१०. गुरुतम
२११. धाम	२१२. सत्य	२१३. सत्यपराक्रम
२१४. निमिष	२१५. अनिमिष	२१६. स्रग्वी
२१७. वाचस्पतिरुदारधी	२१८. अग्रणी	२१९. ग्रामणी
२२०. श्रीमान्	२२१. न्याय	२२२. नेता
२२३. समीरण	२२४. सहस्त्रमूर्धा	२२५. विश्वात्मा
२२६. सहस्त्राक्ष	२२७. सहस्त्रपात्	२२८. आवर्तन
२२९. निवृत्तात्मा	२३०.संवृत	२३१. सम्प्रमर्दन

२३२. अहःसंवर्तक २३३. वह्नि २३४. अनिल
२३५. धरणीधर २३६. सुप्रसाद २३७. प्रसन्नात्मा
२३८. विश्वधृक् २३९. विश्वभुक् २४०. विभु
२४१. सत्कर्ता २४२. सत्कृत २४३. साधु
२४४. जह्नु २४५. नारायण २४६. नर
२४७. असंख्येय २४८. अप्रयात्मा २४९. विशिष्ट
२५०. शिष्टकृत २५१. शुचि २५२. सिद्धार्थ
२५३. सिद्धसंकल्प २५४. सिद्धदः २५५. सिद्धसाधन
२५६. वृषाही २५७. वृषभ २५८. विष्णु
२५९. वृषपर्वा २६०. वृषोदर २६१. वर्धन
२६२. वर्धमान २६३. विविक्त २६४. श्रुतिसागर
२६५. सुभुज २६६. दुर्धर २६७. वाग्मी
२६८. महेन्द २६९. वसुद २७०. वसु
२७१. नैकरूप २७२. वृहदुप २७३. विशिपिष्ट
२७४. प्रकाशन २७५. औजस्तेजोद्युतिधर २७६. काशात्मा
२७७. प्रतापन २७८. ऋद्ध २७९. स्पष्टाक्षर
२८०. मन्त्र १८१. चन्द्राशु २८२. भास्करद्युति
२८३. अमृतांशूदभव २८४. भानु २८५. शशिबिन्दु
२८६. सुरेश्वर २८७. औषधम् २८८. जगतःसेतु
२८९. सत्यधर्मपराक्रम २९०. भूतभव्यभवन्नाथ २९१. पवन
२९२. पावन २९३. अनल २९४. कामहा
२९५. कामकृत् २९६. कान्त २९७. काम
२९८. कामप्रद २९९. प्रभु ३००. युगादिकृत्
३०१. युगावर्त ३०२. नैकमाय ३०३. महाशन
३०४. अदृश्य ३०५. व्यक्तरूप ३०६. सहस्रजित्
३०७. अनन्तजित् ३०८. इष्ट ३०९. अविशिष्ट
३१०. शिष्टेष्ट ३११. शिखण्डी ३१२. नहुष
३१३. वृष ३१४. क्रोधहा ३१५. क्रोधकृत्कर्ता

३१६. विश्वबाहु ३१७. महीधर ३१८. अच्युत
३१९. प्रथित ३२०. प्राण ३२१. प्राणदः
३२२. वासवानुज ३२३. अपांनिध ३२४. अधिषठनम्
३२५. अप्रमत ३२६. प्रतिष्ठित ३२७. स्कन्द
३२८. स्कन्दधर ३२९. धुर्य ३३०. वरद
३३१. वायुवाहन ३३२. वासुदेव ३३३. बृहद्भानु
३३४. आदिदेव ३३५. पुरन्दर ३३६. अशोक
३३७. तारण ३३८. तार ३३९. शूर
३४०. शौरि ३४१. जनेश्वर ३४२. अनूकूल
३४३. शतावर्त ३४४. पद्मी ३४५. पद्निभेक्षण
३४६. पद्मनाभ ३४७. अरविन्दाक्ष ३४८. पद्मगर्भ
३४९. शरीरभृत् ३५०. महर्द्धि ३५१. ऋद्ध
३५२. वद्धात्मा ३५३. महाक्ष ३५४. गरुडध्वज
३५५. अतुल ३५६. शरभ ३५७. भीम
३५८. समयज्ञ ३५९. हर्विर्हरि ३६०. सर्वलक्षणलक्षण्य
३६१. लक्ष्मीवान् ३६२. समितिञ्चय ३६३. विक्षर
३६४. रोहित ३६५. मार्ग ३६६. हेतु
३६७. दामोदर ३६८. सह ३६९. महीधर
३७०. महांभाग ३७१. वेगवान् ३७२. अमिताशान
३७३. उद्भव ३७४. देव ३७५. श्रीगर्ग
३७६. परमेश्वर ३७७. करणम् ३७८. कारणम्
३७९. कर्ता ३८०. विकर्ता ३८१. गहन
३८२. गुह ३८३. व्यवसाय ३८४. व्यवस्थान
३८५. संस्थान ३८६. स्थानद ३८७. ध्रुव

३८८. परिर्द्ध	३८९. परमस्पष्ट	३९०. तुष्ट
३९१. पुष्ट	३९२. शुभेक्षण	३९३. राम
३९४. विराम	३९५. विरत	३९६. मार्ग
३९७. नेय	३९८. नय	३९९. अनय
४००. वीर	४०१. शक्तिमतां श्रेष्ठ	४०२. धर्म
४०३. धर्मविदुत्तम	४०४. वैकुण्ठ	४०५. पुरुष
४०६. प्राण	४०७. प्राणद	४०८. प्रणव
४०९. पृथु	४१०. हिरण्यगर्भ	४११. शत्रुघ्न
४१२. व्याप्त	४१३. वायु	४१४. अधोक्षज
४१५. ऋतु	४१६. सुदर्शन	४१७. काल
४१८. परमेष्ठी	४१९. परिग्रह	४२०. उग्र
४२१. संवत्सर	४२२. दक्ष	४२३. विश्राम
४२४. विश्वदक्षिण	४२५. विस्तार	४२६. विस्तारकर्ता
४२७. स्थावरस्थाणु	४२८. प्रमाणम्	४२९. बीजमव्ययम्
४३०. अर्थ	४३१. अनर्थ	४३२. महाकोश
४३३. महाभोग	४३४. महाधन	४३५. अनिर्विण्ण
४३६. स्थविष्ठ	४३७. अभू	४३८. धर्मयूप
४३९. महामख	४४०. नक्षत्रनेमि	४४१. नक्षत्री
४४२. क्षम	४४३. क्षाम	४४४. समीहन
४४५. यज्ञ	४४६. इज्य	४४७. महेज्य
४४८. क्रतु	४४९. सत्रम्	४५०. सतांगति
४५१. सर्वदर्शी	४५२. विमुक्तात्मा	४५३. सर्वज्ञ
४५४. ज्ञानमुत्तमम्	४५५. सुव्रत	४५६. सुमुख
४५७. सूक्ष्म	४५८. सुघोष	४५९. सुखद

४६०. सुहृदं ४६१. मनोहर ४६२: जितक्रोध

४६३. बीरबाहु ४६४. विदारण ४६५. स्वापन

४६६. स्ववश ४६७. व्यापी ४६८. नैकात्मा

४६९. नैककर्मकृत् ४७०. वत्सर ४७१. वत्सल

४७२. वत्सी ४७३. रत्नगर्भ ४७४. धनेश्वर

४७५. धर्मगुप् ४७६. धर्मकृत् ४७७. धर्मी

४७८. सत् ४७९. असत् ४८०. क्षरमं

४८१. अक्षरम ४८२. अविज्ञाह्त ४८३. सहस्रांशु

४८४. विधाता ४८५. कृतलक्षण ४८६. गभस्तिनेमि

४८७. सत्तवस्थ ४८८. सिंह ४८९. भूतमहेश्वर

४९०. आदिदेव ४९१. महादेव ४९२. देवेश

४९३. देवभृद्रगुरु ४९४. उत्तर ४९५. गोपति

४९६. गोप्ता ४९७. ज्ञानगम्य ४९८. पुरातन

४९६. गोप्ता ४९७. ज्ञानगम्य ४९८. पुरातन

४९९. शरी भूतभृत् ५००. भोक्ता ५०१. कपीन्द्र

५०२. भूरिदक्षिण ५०३. सोमप ५०४. अमृतप

५०५. सोम ५०६. पुरुजित ५०७. पुरुषोत्तम

५०८. विनय ५०९. जय ५१०. सत्यसंघ

५११. दाशार्ह ५१२. सात्वतांपति ५१३. जीव

५१४. विनयिता साक्षी ५१५. मुकुन्द ५१६. अमितविक्र

५१७. अम्भोनिधि ५१८. अन्तक ५१९. अनन्तात्मा

५२०. महोदधिशय ५२१. अज ५२२. महार्हं

५२३. स्वभाव्य ५२४. जितामित्र ५२५. प्रमोदन

५२६. आनन्द	५२७. नन्दन	५२८. नन्द
५२९. सत्यधर्मा	५३०. त्रिविक्रम	५३१. महर्षि
५३२. कृतज्ञ	५३३. मेदिनीपति	५३४. त्रिपद
५३५. त्रिदशाध्यक्ष	५३६. महाश्रृंग	५३७. कृतान्तकृत्
५३८. महावराह	५३९. गोविंद	५४०. सुषेण
५४१. कनकाङ्गदी	५४२. गुह्य	५४३. गंभीर
५४४. गहन	५४५. गुप्त	५४६. चक्रगदाधर
५४७. वेधा	५४८. स्वांग	५४९. अजित
५५०. कृष्ण	५५१. दृढ्	५५२. संकर्षणोऽच्युत
५५३. वरुण	५५४. वारुण	५५५. वृक्ष
५५६. पुष्कराक्ष	५५७. महामना	५५८. भगवान्
५५९. भगहा	५६०. आनन्दी	५६१. वनमाला
५६२. हलायुध	५६३. आदित्य	५६४. ज्योतिरादित्य
५६५. सहिष्णु	५६६. गतिसत्तम	५६७. सुधन्वा
५६८. खण्डपरशु	५६९. दारुण	५७०. द्रविणप्रद
५७१. दिवस्पृक्	५७२. सर्वदृग्व्यास	५७३. वाचस्पतिरयोनिज
५७४. त्रिसामा	५७५. सामग	५७६. साम
५७७. निर्वाणम्	५७८. भेषजम्	५७९. भिषक
५८०. संन्यासकृत	५८१. शम	५८२. शांत
५८३. निष्ठा	५८४. शांत	५८५. परायणम्
५८६. शुभांग	५८७. शान्दिः	५८८. स्रष्टा
५८९. कुमुद	५९०. कुवलेशय	५९१. गोहित

५१२. गोपति ५१३. गोप्ता ५१४. वृषभाक्ष
५१५. वृषप्रिय ५१६. अनिवर्ती ५१७. निवृत्तात्मा
५१८. संक्षेप्ता ५१९. क्षेमकृत् ६००. शिव
६०१. श्रीवत्सवक्ष ६०२. श्रीवास ६०३. श्रीपति
६०४. श्रीवतांवर ६०५. श्रीदः ६०६. श्रीशः
६०७. श्रीनिवास ६०८. श्रीनिधि ६०९. श्रीविमांवन
६१०. श्रीधर ६११. श्रीकर ६१२. श्रेय
६१३. श्रीमान् ६१४. लोकत्रयाश्रय ६१५. स्वक्ष
६१६. स्वङ्ग ६१७. शतानन्द ६१८. नन्दी
६१९. ज्योतिर्गणेश्वर ६२०. विजितात्मा ६२१. अविधेयात्मा
६२२. सत्कीर्ति ६२३. छिन्नसंशय ६२४. उदीर्ण
६२५. शर्ततश्चक्षु ६२६. अशीश ६२७. शाश्वतस्थिर
६२५. शर्तुश्चुक्षु ६२६. अशीश ६२७. शाश्शवतस्थिर
६२८. भूशय ६२९. भूषण ६३०. भूति
६३१. विशोक ६३२. शोकनाशन ६३३. अर्चिष्मान
६३४. अर्चित ६३५. कुम्भ ६३६. विशुद्धात्मा
६३७. विशोधन ६३८. अनिरुद्ध ६३९. अप्रतिरथ
६४०. प्रद्युम्न ६४१. अमितविक्रम ६४२. कालनेमिनिह
६४३. वीर ६४४. शौरि ६४५. शूरजनेश्वर
६४६. त्रिलोकात्मा ६४७. त्रिलोकेश ६४८. केशव
६४९. केशिहा ६५०. हरि ६५१. कामदेव
६५२. कामपाल ६५३. कामी ६५४. कान्त
६५५. कृतागम ६५६. अनिर्देश्यवपु ६५७. विष्णु

६५८. वीर	६५९. अनन्त	६६०. धनञ्जय
६६१. ब्रह्मण्य	६६२. ब्रह्मकृत्	६६३. ब्रह्म
६६४. ब्रह्मा	६६५. ब्रह्माविवर्धन	६६६. ब्रह्मावित
६६७. ब्रह्मण	६६८. ब्रह्मी	६६९. बह्मज्ञ
६७०. ब्राह्मणप्रिय	६७१. महाक्रम	६७२. महाकर्मा
६७३. महातेजा	६७४. महोरग	६७५. महाक्रतु
६७६. महायज्वा	६७७. महायज्ञ	६७८. महाहवि
६७९. स्तव्य	६८०. स्तवप्रिय	६८१. स्तोत्रम्
६८२. स्तुति	६८३. स्तोता	६८४. रणप्रिय
६८५. पूर्ण	६८६.पूरयिता	६८७. पुण्य
६८८. पुण्यकीर्ति	६८९. अनामय	६९०. मनोजव
६९१. तीर्थकर	६९२. वसुरेता	६९३. वसुप्रद
६९४. वसुप्रदः	६९५. वासुदेव	६९६. वसु
६९७. वसुमना	६९८. हविः	६९९. सद्गति
७००. सत्कृति	७०१. सत्ता	७०२. सद्भूति
७०३. सत्परायण	७०४. शूरसेनं	७०५. यदुश्रेष्ठ
७०६. सन्निवास	७०७. सुयामुन	७०८. भूतावास
७०९. वासुदेव	७१०. सर्वासुनिलय	७११. अनल
७१२. दर्पहा	७१३. दर्पद	७१४. दृप्त
७१५. दुर्धर	७१६. अपराजित	७१७. विश्मूर्ति
७१८. महामूर्ति	७१९. दीप्तमूर्ति	७२०. अमूर्तिमान
७२१. अनेकमूर्ति	७२२. अव्यक्त	७२३. शतमूर्ति
७२४. शतानन	७२५. एक	७२६. नैक

७२७. सब	७२८. कः	७२९. किम्
७३०. यत्	७३१. तत्	७३२. पद्मनुत्तमम्
७३३. लोकबन्धु	७३४. लोकनाथ	७३५. माधव
७३६. भक्तवत्सल	७३७. सुवर्णवर्ण	७३८. हेमांग
७३९. वरांग	७४०. चन्दनागंदी	७४१. वीरहा
७४२. विषम	७४३. शून्य	७४४. घृतशी
७४५. अचल	७४६. चल	७४७. अमानी
७४८. मानद	७४९. मान्य	७५०. लोकस्वामी
७५१. त्रिलोकधृक्	७५२. सुमेधा	७५३. मेधज
७५४. धन्य	७५५. सत्यमेधा	७५६. धराधर
७५७. तेजोवृष	७५८. द्युतिधर	७५९. प्रग्रह
७६०. सर्वशस्त्रभृतांवर	७६१. निग्रह	७६२. व्यग्र
७६३. नेकश्रंग	७६४. गदाग्रज	७६५. चतुमूर्ति
७६६. चतुर्बाहु	७६७. चतुर्व्यूह	७६८. चतुर्गति
७६९. चतुरात्मा	७७०. चतुर्भाव	७७१. चतुर्वेदवित्
७७२. एकपात्	७७३. समावर्त	७७४. निवृत्तात्मा
७७५. दुर्जय	७७६. दुरतिकर्म	७७७. दुर्लभ
७७८. दुर्गम	७७९. दुर्ग	७८०. दुरावास
७८१. दुरारिहा	७८२. भुभांग	७८३. लोकसारंग
७८४. सतन्तु	७८५. तन्तुवर्धन	७८६. इन्द्रकर्मा
७८७. महाकर्मा	७८८. कृतकर्मा	७८९. कृतागम
७९०. उद्भव	७९१. सुन्दर	७९२. सुन्द
७९३. रत्ननाभ	७९४. सुलोचना	७९५. अर्क

७९६. वाजसन
७९७. श्रृंगी
७९८. जयन्त
७९९. सर्वविज्जया
८००. सुवर्णबिन्दु
८०१. अक्षोभ्य
८०२. सर्ववागीश्वरेश्वर
८०३. महाह्रद
८०४. महागर्त
८०५. महाभूत
८०६. महानिधि
८०७. कुमुद
८०८. कुन्दर
८०९. कुन्द
८१०. पर्जन्य
८११. पावन
८१२. अनिल
८१३. अमृताश
८१४. अमृतवपु
८१५. सर्वज्ञ
८१६. सर्वतोमुख
८१७. सुलभ
८१८. सुव्रत
८१९. सिद्ध
८२०. शत्रुजित
८२१. शत्रुतापन
८२२. न्यग्रोध
८२३. उदुम्बर
८२४. अश्वत्थ
८२५. चाणूरान्ध्रनिषूदन
८२६. सहस्रार्चि
८२७. सप्तजिह्व
८२८. सप्तैधा
८२९. सप्तवाहन
८३०. अमूर्ति
८३१. अनघ
८३२. अचिन्त्य
८३३. भयकृत
८३४. भयनाशन
८३५. अणु
८३६. वृहत्
८३७. कृश
८३८. स्थूल
८३९. गुणभृत्
८४०. निर्गुण
८४१. महान्
८४२. अधृत
८४३. स्वधृत
८४४. स्वास्य
८४५. प्राग्वंश
८४६. वंशवर्धन
८४७. भारभृत
८४८. कथित
८४९. योगी
८५०. योगीश
८५१. सर्वकामद
८५२. आश्रम
८५३. श्रमण
८५४. क्षाम
८५५. सुपर्ण
८५६. वायुवाहन
८५७. धनुर्धर
८५८. धनुर्वेद
८५९. दण्ड
८६०. दमयिता
८६१. दम
८६२. अपराजित
८६३. सर्वसह
८६४. नियन्ता

८६५. अनियम	८६६. अयम	८६७. सत्ववान्
८६८. सात्विक	८६९. सत्य	८७०. सत्यधर्मपरायण
८७१. अभिप्राय	८७२. प्रियार्ह	८७३. अहं
८७४. प्रियकृत्	८७५. प्रीतिवर्धन	८७६. विहायसगति
८७७. ज्योति	८७८. सुरुचि	८७९. हुतभुक्
८८०. विभु	८८१. रवि	८८२. विरोचन
८८३. सूर्य	८८४. सविता	८८५. रविलोचन
८८६. अनन्त	८८७. अन्त	८८८. भोक्ता
८८९. सुखद	८९०. नैकज	८९१. अग्रज
८९२. अनिर्विष्ण	८९३. सदामर्षी	८९४. लोकाधिष्ठानम्
८९५. अद्भूत	८९६. सनात्	८९७. सनातनतम्
८९८. कपिल	८९९. कपि	९००. अप्यय
९०१. सवस्तिद	९०२. स्वस्तिकृत्	९०३.स्वस्ति
९०४. स्वस्तिमुक्	९०५. स्वस्तदक्षिण	९०६. अरौद्र
९०७. कुण्डली	९०८. चक्री	९०९. विक्रमी
९१०. ऊर्जितशासन	९११. शव्दातिग	९१२. शब्दसह
९१३. शिर्शिर	९१४. शर्वरीकर	९१५. अक्रूर
९१६. पेशल	९१७. दक्ष	९१८. दक्षिण
९१९. क्षमिणांवर	९२०. विद्वत्तम	९२१. वीतभय
९२२. पुण्यश्रवणकीर्तन	९२३. उत्तारण	९२४. दुषकृतिहा
९२५. पुण्य	९२६. दुःस्वप्ननाशन	९२७. वीरहा
९२८. रक्षण	९२९. सन्त	९३०. जीवन
९३१. पर्यवस्थित	९३२. अनन्तरूप	९३३. अनन्तश्री

९३४. जितमन्यु
९३५. भयापह
९३६. चतुरस्र
९३७. गंभीरात्मा
९३८. विदिश
९३९. व्यादिश
९४०. दिश
९४१. अनादि
९४२. भूर्भूव
९४३. लक्ष्मी
९४४. सुवीर
९४५. रूचिरांगद
९४६. जनन
९४७. जनजन्मादि
९४८. भीम
९४९. भीमपराक्रम
९५०. आधारनिलय
९५१. अंधाता
९५२. पुष्पह्रास
९५३. प्रजागर
९५४. ऊर्ध्वर्ग
९५५. सत्पथाचार
९५६. प्राणद
९५७. प्रणव
९५८. पण
९५९. प्रमाणम्
९६०. प्राणनिलय
९६१. प्राणभूत
९६२. प्राणजीवन
९६३. तत्त्म
९६४. तत्वित्
९६५. एकात्मा
९६६. जन्मृत्युरातिग
९६७. भूर्भव: स्वस्तरु
९६८. तार
९६९. सविता
९७०. प्रपितामह
९७१. यज्ञ
९७२. यज्ञपति
९७३. यन्वी
९७४. यज्ञांग
९७५. यज्ञवाहन
९७६. यज्ञभृत्
९७७. यज्ञकृत्
९७८. यज्ञी
९७९. यज्ञभुक्
९८०. यज्ञसाधन
९८१. यज्ञान्तकृत्
९८२. यज्ञगुह्यम्
९८३. अन्नम्
९८४. अन्नाद्
९८५. आत्मयोनि
९८६. स्वयंजात
९८७. वैखान
९८८. सामगायन
९८९. देवकीनन्दन
९९०. स्रष्टह्
९९१. क्षितीश
९९२. पापनाशन
९९३. शंखभृत्
९९४. नन्दकी
९९५. चक्री
९९६. शारंगधन्वा
९९७. गधाधर
९९८. रथांगपाणि
९९९. अक्षोभ्य
१०००. सर्वप्रहरणायुध

।।श्री लक्ष्मीजी की आरती।।

जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता,
आदिशक्ति कहि तुमको सुरगण है ध्याता ।
जय कमलालवालिनी हरं प्रिये कमले,
काली गिरासमेते जय लक्ष्मी विमले ।
इन्द्राणी रुद्राणी तुम हो,
शकल शोक की माता पालन हेतु महीं ।
जिस घर वास तुम्हारा उसका क्या कहना,
रम्य भवन है उनके होवें अति गहना।
महानिशा में हौवे घर-घर पूजा ही तेरी,
जय कमले हरि भामिनि अबसुध ले मेरी ।
निज पति पुत्र समेता बसिवो मम घर में,
यही प्रार्थना मेरी स्वाकारो उर में ।
पूत कपूत भलेहि हो लेकिन तू माता,
यही सोच अब मुझ पर करुणा कर माता ।
नहीं पाठ और पूजा मैं जानूँ महतारी,
केवल चरणों का ही हूँ आश्रयकारी ।
भक्ति भाव का अम्बे ज्ञान नहीं मुझको,
धरणीधर की अम्बे लज्जा है तुझको।

श्री तुलसीजी की आरती

जय तुलसी माता, जय तुलसी माता।
सब जग की सुखदाता तुम हो वर दाता ।।जय०।।
सब योगों के ऊपर सब रोगों के ऊपर।
रूज से रक्षा करके, भव की तुम त्राता ।।जय०।।
बटुपुत्री हे श्यामा, सूर बल्ली हे ग्राम्या।
विष्णु प्रिये जो तुमको सेवे सो नर तरजाता ।।जय०।।
हरि के शीश बिराजत, त्रिभुवन से वंदित।
पतित जनों की तारिणी तुम हो विख्याता ।।जय०।।
लेकर जन्म विजन में आई दीव्य भवन।
मानव लोक तुम्हीं से सुख सम्पत्ति पाता ।।जय०।।
हरि को तुम अति प्यारी, श्यामा वरण सुकुमारी।
प्रेम अजब है उनका, तुमसे कैसा नाता ।।जय०।।

।। इतिसिद्धम्।।